राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक समाचार पत्र

समाचार गेट

वर्ष 1, अंक 82, पेज 8, मूल्य 1 रूपये | गुरुवार 6 जून 2024 | samachargate@gmail.com | TITLE CODE: HARHIN11569

आम आदमी पार्टी को जनता ने पूरी तरह से उखाड़ कर फेंक दिया हैः अनिल विज

तीसरी बार भाजपा की फिर से सरकार बनाने जा रही नरेंद्र मोदी को प्रधानमंत्री

समाचार गेट/एजेंसी

अम्बाला। लोकसभा चुनाव के नतीजे आने के बाद हरियाणा के पूर्व गृह एवं स्वास्थ्य मंत्री श्री अनिल विज ने प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि तीसरी बार भाजपा की फिर से सरकार बनाने जा रही है और तीसरी बार नरेंद्र मोदी जी प्रधानमंत्री बनने जा रहे हैं। यह अपने आप में बहुत बड़ी बात है क्योंकि दो बार जो सरकार रह जाती है उनकी बहुत सी कमियां जनता के बीच होती है लेकिन भाजपा की ऐसी कोई भी कमियां नहीं रही और इसीलिए तीसरी बार केंद्र में भाजपा की सरकार बनने जा रही है।

पूर्व मंत्री अनिल विज ने कहा कि कांग्रेस झूठ फैलाने की राजनीति करती है और भाजपा की सच बताने की राजनीति करती है

भाजपा की अपेक्षा से कम सीट आने पर कांग्रेसियों ने इसको लेकर भाजपा पर निशाना साधा जिसके बाद अनिल विज ने प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि वह 400 पार कहे या 800 पार कहें कांग्रेसियों को इससे क्या लेना देना भाजपा ने चुनाव जीता है और बात जीत और हार की होती है। वह अपने कार्यकताओं को तैयार करने के लिए क्या कहते हैं कैसे करते हैं इससे कांग्रेस को क्या लेना, क्या मतलब। कांग्रेस ने जो झूठ फैलाया है क्या कांग्रेस को वह नहीं नजर आता। कांग्रेस झूठ फैलाने की राजनीति करती है जबकि भाजपा सच बताने की राजनीति करती है और जनता को सच बताया है जिसके बाद जनता ने नरेंद्र मोदी को तीसरी बार प्रधानमंत्री बनाने का मौका दिया है।

वहीं, एक सवाल पर उन्होंने कहा कि जनता की अदालत है और जनता का फैसला सर्वोपरि होता है इसमें कोई किंतु परंतु नहीं होता और इस फैसला को मानना चाहिए।

विज ने कहा कि आम आदमी पार्टी को जनता ने पूरी तरह से उखाड़ कर फेंक दिया है ।

आम आदमी पार्टी को इस लोकसभा चुनाव में नाममात्र सीटें मिली जिसको लेकर अनिल विज ने चुटकी लेते हुए कहा कि आम आदमी पार्टी तो बिल्कुल खत्म हो गई है इसका तो नाम भी नहीं लेना चाहिए क्योंकि आम आदमी पार्टी को जनता ने पूरी तरह से उखाड़ कर फेंक दिया है।

खिचड़ी सरकार के मुखिया बनकर कमजोर हो जाएंगे नरेंद्र मोदी?

समाचार गेट/एजेंसी

नई दिल्ली। राहुल गांधी से लेकर ममता बनर्जी तक विपक्षी नेताओं ने नतीजों के बाद अपनी टिप्पणियों में बीजेपी के बहुमत हासिल न कर पाने को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की हार बताया। वह भी तब जब बीजेपी अकेले इतनी सीट हासिल की है, जितनी सीटें विपक्षी इंडिया गठबंधन की सभी पार्टियों ने मिलकर भी हासिल नहीं कर पाई हैं। वैसे विपक्ष की तरफ से नतीजों को मोदी की हार बताना अपेक्षित ही था, क्योंकि एनडीए का पूरा अभियान उन्हीं के इर्द-गिर्द केंद्रित था। सिर्फ टीडीपी को कुछ हद तक इसका अपवाद कहा जा सकता है। मोदी के ऊजार्वान अभियान ने केवल उनकी व्यक्तिगत जिम्मेदारी को बढ़ाने का काम किया। अब पहली बार वह खिचड़ी सरकार चलाएंगे। गुजरात में भी वह मुख्यमंत्री रहते पूर्ण बहुमत की मजबूत सरकार चलाई थी। प्रधानमंत्री के तौर पर भी उन्होंने 10 साल पूर्ण बहुमत की सरकार चलाई। अब खिचड़ी सरकार में उनके सामने न सिर्फ मजबूत और नए जोश से लबरेज आक्रामक विपक्ष का सामना करना पड़ेगा बल्कि नीतीश और चंद्रबाबू नायडू जैसे सहयोगियों के दबाव से भी पार पाना होगा जो चाहेंगे कि सरकार उनकी शर्तों और उनके इशारे पर चले।

बीजेपी भले ही अकेले दम पर पूर्ण बहुमत से चूक गई है लेकिन लगातार 10 साल तक केंद्र की सत्ता में रहने के बाद भी इस तरह का प्रदर्शन कहीं से भी कमजोर नहीं है। ये ऐसा प्रदर्शन है जिसके बारे में कोई भी सत्ताधारी दल सिर्फ सपना ही देख सकता है। जवाहरलाल नेहरू के बाद मोदी केवल दूसरे प्रधानमंत्री होंगे जो तीसरा कार्यकाल हासिल करेंगे, भले ही इस बार गठबंधन के सहारे हो। असल में उनकी उपलब्धि को और भी बड़ा माना जा सकता है क्योंकि यह एक ऐसे राजनीतिक माहौल में हुआ है जो नेहरू के मुकाबले कहीं ज्यादा ध्रुवीकृत, विखंडित और प्रतिस्पर्धी है। इसके अलावा, नेहरू को यह भी फायदा मिला कि उन्हें महात्मा गांधी का आशीर्वाद प्राप्त था और वे एक ऐसी पार्टी के नेता थे जो स्वतंत्रता आंदोलन की अगुआ थी और इस वजह से जनता का उससे भावनात्मक लगाव था।

2024 की बात करें तो, 240 का आंकड़ा 400-पार के दावों के सामने बहुत छोटा दिखता है लेकिन 1984 के बाद अबतक कभी कांग्रेस या गैर-बीजेपी पार्टियों ने इतनी सीटें हासिल नहीं कर पाई हैं। ये 1984 के बाद किसी भी गैर-बीजेपी पार्टी की तरफ से हासिल किया गया सबसे अच्छा आंकड़ा है, जब कांग्रेस इंदिरा गांधी की हत्या से पैदा हुई व्यापक सहानुभूति लहर पर सवार थी। हालांकि, इस झटके ने महंगाई और बेरोजगारी जैसे मुद्दों को सामने ला दिया है, जो चुनाव अभियान के दौरान चेतावनी के संकेत के रूप में उभरे थे, लेकिन बीजेपी ने उसे हल्के में लिया। वह तो अतिआत्मविश्वास में यह मानकर चल रही है कि पूर्ण बहुमत तो मिलना ही मिलना है।

हालांकि मोदी ने महंगाई को नियंत्रित करने में अच्छा काम किया, लेकिन बीजेपी संभवतः ये मानकर चली कि वोट देते वक्त मतदाता बेकाबू महंगाई के इंटरनैशनल पैटर्न को भी ध्यान में रखेंगे। मोदी ने पब्लिक इन्फ्रास्ट्रक्चर के विस्तार और अनौपचारिक क्षेत्र में रोजगार सृजन पर जोर दिया।

बाजार भाव

सोना ₹ 82500

चाँदी ₹ 57200

आज का मौसम

तापमान °

ज्यादा 40°

कम 36°

हंसना जरूरी है!

ऑफलाइन रहता हूं
तो सिर्फ दाल, रोटी,
नौकरी एवं
परिवार की ही चिंता
रहती है
ऑनलाइन होते ही
धर्म, समाज, राजनीती,
देश, विश्व
और पूरे ब्रह्माण्ड की
चिंताए
होने लगती है
आम भारतीय नागरिक

ये वो दौर है जनाब
जहां इंसान गिर जाये
तो...
हँसी निकल जाती है
और मोबाईल गिर जाये
तो...
जान निकल जाती है

बीजेपी के सुरेश गोपी पर इंडस्ट्री में लगे हैं करोड़ों के दांव क्या छोड़ देंगे फिल्म?

समाचार गेट/संजय शर्मा

केरल में बीजेपी के लिए पहली सीट जीतकर साउथ एक्टर सुरेश गोपी ने इतिहास रच दिया है। उन्होंने सीपीआई के वी.एस. सुनील कुमार और मौजूदा कांग्रेस सांसद के. मुरलीधरन को हराकर त्रिशूर लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र में ऐतिहासिक जीत दर्ज की। उन्होंने 74,686 वोटों के अंतर से जीत अपने नाम की।

चुनाव जीतने के बाद उनके फैन्स के मन में सवाल है कि क्या वह फिल्म इंडस्ट्री से दूरी बना लेंगे? इस पर गोपी ने कहा है कि वह पहले उन प्रोजेक्ट को पूरा करेंगे, जिन्हें वह इससे पहले साइन कर चुके हैं।

बता दें कि पिछले साल तक जब वे राज्यसभा के मनोनीत सदस्य थे, तब भी उन्होंने एक्टिंग प्रोजेक्ट्स में काम को जारी रखा था। बुधवार को जब उनसे फिल्म जगत में बने रहने के बारे में सवाल किया गया तो उन्होंने कहा कि वह पहले कमिटेड प्रोजेक्ट्स को पूरा करना चाहते हैं।

गोपी ने कहा, 'मेरे पास ममूटी की प्रोडक्शन कंपनी का एक प्रॉजेक्ट है और इस पर पहले ही काम शुरू हो चुका है। इसके अलावा, मेरे पास बिजनेसमैन गोकुलम गोपालन की प्रोडक्शन फर्म के साथ तीन प्रोजेक्ट्स हैं। उनमें से एक 100 करोड़ रुपये बजट वाली पैन-यूनिवर्स फिल्म है। इसलिए मैं चाहता हूं कि जैसे मैंने राज्यसभा सदस्य रहते हुए फिल्में कीं, वैसे ही फिल्में मैं अब भी करता रहूं।'

कैबिनेट में संभावित जगह के बारे में पूछे गए सवाल के जवाब में गोपी ने कहा कि वह हमेशा पार्टी के कहे अनुसार काम करेंगे। वह कौन सा पोर्टफोलियो पसंद करेंगे, इसके जवाब में उन्होंने कहा- ऐसा पोर्टफोलियो जो 10 अलग-अलग विभागों को देख सके

कैबिनेट में संभावित जगह के बारे में पूछे गए सवाल के जवाब में गोपी ने कहा कि वह हमेशा पार्टी के कहे अनुसार काम करेंगे। वह कौन सा पोर्टफोलियो पसंद करेंगे, इसके जवाब में उन्होंने कहा- ऐसा पोर्टफोलियो जो 10 अलग-अलग विभागों को देख सके।

बात करें एक्टिंग करियर की तो गोपी ने अपने 32 साल के करियर में 250 से ज्यादा फिल्में की हैं। उन्होंने 'मणिचित्राथाझु', 'ए नॉर्दर्न स्टोरी ऑफ वेलोर' और 'ओरु सीबीआई डायरी कुरिप्पु' समेत कई फिल्मों में अपनी एक्टिंग का लोहा मनवाया है। उन्होंने 1998 में आई फिल्म 'कलियाट्टम' के लिए बेस्ट एक्टर का नेशनल फिल्म अवॉर्ड जीता था। सुरेश गोपी अक्टूबर 2016 में बीजेपी में शामिल हुए। गोपी को 2019 के लोकसभा चुनाव में त्रिशूर से हार का सामना करना पड़ा था। दो साल बाद 2021 के विधानसभा चुनाव में भी उन्हें हार का मुंह देखना पड़ा। दो बार हार झेलने के बाद आखिरकार लोकसभा चुनाव 2024 में उनकी जीत हुई।

संकट में नायब सैनी सरकार

चंडीगढ। हरियाणा में मंगलवार को घोषित हुए लोकसभा चुनाव परिणाम के बाद प्रदेश की राजनीति का परिदृश्य भी बदल गया है। करनाल विधानसभा उपचुनाव का परिणाम घोषित होने के बाद प्रदेश में बीजेपी विधायकों की संख्या बढ़कर 41 हो गई है। दो निर्दलीय विधायकों के समर्थन के साथ बीजेपी के पास आंकड़ा 43 हो गया। हालांकि, अब भी हरियाणा की नायब सरकार पर बहुमत का संकट बना रहेगा।

हरियाणा विधानसभा में दो विधायकों के इस्तीफा देने और एक विधायक की मौत के बाद विधायकों की संख्या 87 रह गई थी। मंगलवार को घोषित हुए परिणाम में कांग्रेस के वरुण मुलाना चुनाव जीत गए।

24 में से 22 प्रत्याशियों की जमानत जब्त, जेजेपी को पड़े नोटा से भी कम वोट

समाचार गेट/एजेंसी

फरीदाबाद। लोकसभा क्षेत्र फरीदाबाद में इस बार चुनाव लड़ रहे 24 प्रत्याशियों में 22 अपनी जमानत बचाने में नाकाम रहे। बीजेपी के विजेता प्रत्याशी कृष्णपाल गुर्जर और कांग्रेस प्रत्याशी महेंद्र प्रताप को छोड़कर बाकी सभी की जमानत जब्त हुई है। नोटा पांचवें नंबर पर रहा। हरियाणा में साढ़े चार साल सत्ता में रही जेजेपी फरीदाबाद में छठे नंबर पर रही।

चुनाव लड़ने के लिए नामांकन करने समय प्रत्याशी को जमानत के रूप में कुछ राशि जिला निर्वाचन अधिकारी कार्यालय में जमा करानी होती है। इस बार के चुनाव में यह जमानत राशि 25 हजार रुपये थी, जबकि अनुसूचित जाति या अनुसूचित जनजाति वर्ग के उम्मीदवार के लिए यह राशि 12 हजार 500 रुपये रखी गई थी। जो प्रत्याशी चुनाव के दौरान डाले गए कुल वोट का छठा भाग हासिल कर लेते हैं, उनकी जमानत राशि वापस मिल जाती है। इससे कम वोट पाने वालों की जमानत राशि जब्त हो जाती है। चुनावी माहौल में जमानत जब्त होने को लेकर काफी चर्चाएं भी होती हैं। इस बार लोकसभा चुनाव में कुल 24 प्रत्याशी चुनाव मैदान में थे। इन प्रत्याशियों के लिए 1469950 मतदाताओं ने वोट डाले थे। जमानत बचाने के लिए प्रत्याशी को 244990 से अधिक वोटों की जरूरत थी, लेकिन केवल दो प्रत्याशी ही इस आंकड़े को पार कर पाए।

फरीदाबाद में प्रत्याशियों की जमानत जब्त होने का आंकड़ा अधिक है। फरीदाबाद लोकसभा 1977 में बनी थी। तब से अब तक 13 चुनाव हो चुके हैं। इन 13 चुनाव में 262 प्रत्याशी लड़ चुके हैं

फरीदाबाद में प्रत्याशियों की जमानत जब्त होने का आंकड़ा अधिक है। फरीदाबाद लोकसभा 1977 में बनी थी। तब से अब तक 13 चुनाव हो चुके हैं। इन 13 चुनाव में 262 प्रत्याशी लड़ चुके हैं। इनमें केवल 29 प्रत्याशी ही ऐसे रहे हैं, जो डाले गए वोटों के छठे भाग से अधिक वोट हासिल कर पाए हैं, यानी अपनी जमानत बचा पाए हैं। बाकी सभी 233 प्रत्याशियों की जमानत जब्त हुई है। 2014 के चुनाव में तो केवल विजयी उम्मीदवार ही जमानत बचा पाए थे। उस साल 27 प्रत्याशी चुनाव मैदान में थे और जीत हासिल करने वाले प्रत्याशी के अलावा अन्य सभी 26 प्रत्याशियों की जमानत जब्त हुई थी।

बीजेपी के साथ हरियाणा की सत्ता में रही जेजेपी चुनाव से कुछ समय पहले ही अलग हुई थी। विधानसभा चुनाव में जेजेपी मजबूती से उभरी थी, लेकिन लोकसभा चुनाव में उनकी हालत खराब रही। इसी तरह सत्ता में वापसी का सपना देख रही इनेलो भी दम नहीं दिखा सकी। दोनों पार्टियों के लिए शर्मनाक बात रही कि इनसे अधिक वोट नोटा को मिले।

'हिंदू हृदय सम्राटों' के पीछे नहीं गई जनता, लोकसभा चुनावों में नहीं काम आया 'डबल इंजन'

समाचार गेट/नरवीर यादव

नई दिल्ली। लोकसभा चुनाव 2024 के नतीजे सामने आ चुके हैं। इस बार के नतीजे बीजेपी के लिए बहुत शुभ नहीं रहे। एनडीए गठबंधन को बहुमत जरूर मिला है, लेकिन बीजेपी अपने दम पर बहुमत हासिल नहीं कर पाई। बीजेपी को सबसे बड़ा झटका यूपी में लगा। यूपी में बीजेपी को महज 33 सीटें मिली हैं। वहीं समाजवादी पार्टी ने 37 और कांग्रेस ने 6 सीटें जीतीं। बीजेपी के लिए 2014 के बाद से सत्ता हासिल करवाने में यूपी सबसे ज्यादा मददगार रहा है। लेकिन इस बार जिस तरह से नतीजे पलटे वो मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के लिए चौंकाने वाली सच्चाई है। योगी फैक्टर को यहां झटका लगा है जो मजबूत कानून व्यवस्था, विकास, हिंदुत्व का एजेंडा के दमपर देशभर में जाना जाता रहा है। चुनाव प्रचार में योगी-मोदी फैक्टर और डबल इंजन की सरकार का मॉडल बीजेपी पेश करती दिखी। लेकिन नतीजों में 'डबल इंजन' इस बार लड़खड़ा गया और अखिलेश यादव का 'पीडीए' फॉम्युला काम कर गया। इसके अलावा असम के मुख्यमंत्री हिमंता बिस्वा सरमा पर भी बीजेपी ने खूब भरोसा जताया था। पिछले कई चुनावों में सरमा की हिंदुत्ववादी छवि काफी पॉपुलर हो रही है। योगी और सरमा दोनों नेताओं को हिंदू हृदय सम्राट कहकर संबोधित किया जाता रहा है। लेकिन इस चुनाव में दोनों नेताओं पर जनता ने कम भरोसा जताया है।

यूपी में पिछले पांच चुनावों में बड़ा योगी का कद

योगी ने यूपी में लगातार पांच चुनावों में भाजपा की जीत का नेतृत्व किया है। इसमें 2017 और 2022 के विधानसभा चुनाव, 2019 के लोकसभा चुनाव और दो स्थानीय निकाय चुनाव शामिल हैं। इन चुनावों में बीजेपी की शानदार जीत का श्रेय योगी को दिया जाता रहा है, ऐसे में एक्सपर्ट्स का मानना है कि उन्हें इस निराशाजनक प्रदर्शन की भी जिम्मेदारी लेनी होगी।

हालांकि उन्हें बलि का बकरा नहीं बनाया जा सकता।' उम्मीदवारों का चयन, सत्ता विरोधी लहर और उनके खिलाफ बढ़ते आक्रोश को नजर-अंदाज करते हुए किया गया और यह हार के मुख्य कारणों में से एक बनकर उभरा है। पार्टी के एक अंदरूनी सूत्र ने कहा कि योगी ने स्पष्ट रूप से कहा कि उम्मीदवार चयन की जिम्मेदारी केंद्रीय नेतृत्व के पास थी।

लोकसभा चुनाव में किस राज्य ने, किसका दिया साथ

देश के सबसे बड़े राज्य ने बीजेपी को लोकसभा चुनावों में सबसे बड़ा झटका दिया

नई दिल्ली। लोकसभा चुनाव के परिणामों में सभी को हैरान कर दिया है। यह चुनाव परिणाम एनडीए के साथ ही इंडिया गठबंधन की उम्मीदों से उलट आए। लोकसभा चुनाव के परिणाम में तमाम एग्जिट पोल के अनुमानों को उलट दिया है। नतीजों ने साफ किया कि एक बार फिर केंद्र में एनडीए सरकार बनेगी। हालांकि, इंडिया गठबंधन ने राजनीतिक रूप से बेहद अहम उत्तर प्रदेश में शानदार प्रदर्शन से बीजेपी को बड़ा झटका दिया। इस तरह बीजेपी अपने दम पर बहुमत हासिल करने में असफल रही। 2019 के मुकाबले बीजेपी की 63 सीटें कम हो गईं। पार्टी पिछली बार के 303 सीट से घटकर 240 पर रह गई। बीजेपी के लिए यह बड़ा झटका इसलिए भी रहा क्योंकि पार्टी ने 'अबकी बार, 400 पार' का लक्ष्य रखा था। वहीं, कांग्रेस ने 52 सीट के मुकाबले इस बार 99 सीटों पर जीत दर्ज की। तमिलनाडु में एक बार फिर से बीजेपी अपना खाता नहीं खोल पाई। ममता बनर्जी ने एक बार फिर से पश्चिम बंगाल में बीजेपी की दाल नहीं गलने दी। आइए एक नजर डालते हैं कि किस राज्य में किस दल को जीत मिली।

देश के सबसे बड़े राज्य ने बीजेपी को लोकसभा चुनावों में सबसे बड़ा झटका दिया। मोदी और योगी का भगवा डबल इंजन अखिलेश यादव और राहुल गांधी की इंडिया ब्लॉक जोड़ी के सामने पटरी से उतर गया। 37 सीटों के साथ, समाजवादी पार्टी कांग्रेस के नेतृत्व वाले गठबंधन के स्टार के रूप में उभरी। पार्टी ने

अपना सर्वश्रेष्ठ लोकसभा प्रदर्शन किया। भारी पसंदीदा के रूप में देखी जा रही बीजेपी 33 सीटों पर सिमट गई। एनडीए 2019 में 64 (भाजपा 62) से 36 पर आ गया। इसका वोट शेयर लगभग 50% से गिरकर लगभग 43% हो गया, जबकि सपा का 2019 में 18% से उछलकर 33.5% हो गया। कांग्रेस ने छह सीटें जीतीं (इसका वोट शेयर 6.5% से बढ़कर लगभग 10% हो गया।

असली शिव सेना, असली एनसीपी का सवाल लोगों ने सुलझा लिया है। उद्धव ठाकरे और शरद पवार उस राजनीतिक घमासान से उभरे हैं जिसमें उनकी पार्टियों में फूट पड़ गई थी ठाकरे सीएम पद से हट गए और पवार को भतीजे अजित ने एनसीपी से बाहर कर दिया। महा विकास अघाड़ी (एमवीए) ने राज्य की 48 सीटों में से 29 सीटें जीतकर न केवल पवार और उद्धव ने खुद को जननेता के रूप में फिर से स्थापित किया है, बल्कि इस अक्टूबर में होने वाले विधानसभा चुनावों से पहले उन्हें बढ़त भी मिली है। हालांकि, सबसे ज्यादा फायदा कांग्रेस को हुआ है, जो 2019 में एक सीट से बढ़कर 13 पर पहुंच गई है। कांग्रेस सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी है।

डीएमके ने सब कुछ जीत लिया। एमके स्टालिन की लोकप्रियता राष्ट्रीय राजनीति में बढ़ गई क्योंकि उन्होंने इंडिया ब्लॉक को क्लीन स्वीप की ओर अग्रसर किया। ये 2019 में डीएमके गठबंधन द्वारा जीते गए 39 में से 38 से बेहतर प्रदर्शन था। गठबंधन की क्षेत्रीय और जातिगत गतिशीलता और डीएमके सरकार के बड़े कल्याणकारी कदमों ने विपक्ष - क्षेत्रीय प्रतिद्वंद्वी एडीएमके और भाजपा को पीछे छोड़ दिया। एडीएमके, जो भाजपा की सहयोगी थी और विशेष रूप से एडप्पादी के पलानीस्वामी के लिए, राज्य भाजपा प्रमुख के अन्नामलाई की हार बड़ा कारण थी। अब एक चर्चा जोर पकड़ रही है कि क्या एडीएमके और भाजपा भविष्य के चुनावों में प्रतिद्वंद्वी के रूप में चुनाव लड़ते रहेंगे।

गुड़गांव लोकसभा से कांग्रेस के प्रत्याशी रहे राज बब्बर आज नूंह पहुंचे

समाचार गेट/अनिल मोहनियां

नूंह। जहां उन्होंने मेवात की जनता का इतनी बड़ी तादाद में प्यार और समर्थन देने के लिए मेवात जिले की तीनों विधानसभाओं की जनता का आभार जताया और कहा कि वो चुनाव हारे हैं, हिम्मत नहीं हारे।

राज बब्बर ने कहा कि उन्होंने चुनाव से पहले गुड़गांव लोकसभा क्षेत्र की जनता से वादा किया कि वह गुड़गांव में रहकर गुड़गांव लोकसभा क्षेत्र की जनता की सेवा करेंगे और पहले उनके पास मात्र 18 दिन थे और 18 दिन में वह बहुत कम लोगों के पास वोट मांगने के लिए जा पाए। लेकिन अब पूरे 5 साल गुड़गांव लोकसभा क्षेत्र की जनता के पास घर-घर जाकर उनके लिए काम करेंगे और उनसे वोट की अपील करेंगे।

राज बब्बर ने कहा कि मुझे गुड़गांव लोकसभा क्षेत्र में अपनापन महसूस हुआ है

यहां की जनता ने मुझे इतना प्यार और समर्थन दिया है कि मैं शब्दों में बयां नहीं कर सकता

मुझे राजनीति करते हुए काफी समय हो गया लेकिन मुझे आज तक इतनी वोट किसी भी लोकसभा क्षेत्र से नहीं मिला जितना गुड़गांव लोकसभा क्षेत्र की जनता ने मुझे दिया है।

राज बब्बर ने कहा कि जो लोग कहते थे हम राम को लाए हैं और राम हमारा है उन लोगों को ही राम ने बता दिया है कि वह किसी एक के नहीं है वह सबके हैं उन लोगों को रामनगरी में हर का मुंह देखना पड़ा है यह पूरे देश के लिए संदेश है।

इतना ही नहीं उन्होंने कहा कि अब हम हरियाणा के चुनाव की तैयारी में जुड़ेंगे और हरियाणा में कांग्रेस की पूर्ण बहुमत से सरकार बनाकर लोगों के काम करेंगे।

राज बब्बर ने कहा कि जो लोग 400 पर की बात करते थे आज उन्हीं के पास 60 सीट कम है। अब वह अपने सहयोगी दालों पर निर्भर कर रहे हैं।

अब देखना यह है कि किन शर्तों पर वह देश में सरकार बनाते हैं यह अब देखना बाकी है। देश का प्रधानमंत्री कौन बनने गा अब यह देखना है और गुरुर वाली बात नहीं रही है।

राज बब्बर ने इंडिया गठबंधन की सरकार बनाने की बात पर कहा कि यह इंडिया गठबंधन के वरिष्ठ नेताओं का काम है वह क्या करते हैं और किस तरह सरकार बनाते हैं मैं तो एक कार्यकर्ता हूं

राज बब्बर ने कहा कि मैं अब गुड़गांव में रहकर गुड़गांव लोकसभा क्षेत्र की जनता की भरपूर सेवा करूंगा और लगातार लोगों से मिलजुल कर उनके सुख-दुख में शामिल रहूंगा

मुझे गुड़गांव लोकसभा क्षेत्र की जनता ने भरी प्यार और समर्थन दिया है जिसके लिए मैं हमेशा गुड़गांव लोकसभा

क्षेत्र की जनता चाहे वह रेवाड़ी हो या गुडगांव या मेवात में सभी नौ विधानसभा में रहने वाले जनता ने जो प्यार दिया है उनका हमेशा आभारी रहूंगा।

राशन कार्ड उपभोक्ता अवश्य करवाएं ई-केवाईसी: डीसी धीरेंद्र खडगटा

केवाईसी बारे राशन डिपोधारकों को जारी किए निर्देश

समाचार गेट/अनिल मोहनियां

नूंह। उपायुक्त धीरेंद्र खडगटा ने सरकार की योजना के तहत राशन का लाभ उठा रहे सभी उपभोक्ताओं का आह्वान किया है कि वे अपने-अपने राशन डिपो पर पहुंचकर ई केवाईसी अवश्य करवाएं। उन्होंने कहा कि सरकार की तरफ से राशन कार्ड की केवाईसी का कार्य शुरू हो चुका है और यह कार्य 10 जून तक संपन्न किया जाना है।

उपायुक्त धीरेंद्र खडगटा के मार्गदर्शन में जिला खाद्य एवं पूर्ति नियंत्रक महेश यादव की अध्यक्षता में जिला के डिपो धारकों की बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में सभी डिपो धारकों को निर्देश दिए गए कि व जिला के सभी पात्र उपभोक्ताओं की पी.ओ.एस. मशीन के माध्यम ई केवाईसी करवाना सुनिश्चित करें। ई केवाईसी प्रक्रिया के दौरान किसी भी डिपो पर राशन वितरण का कार्य नहीं होगा। उन्होंने कहा कि जिस डिपो धारक द्वारा इस कार्य के प्रति गंभीरता नहीं दिखाई गई अथवा निर्धारित समय में कार्य का निपटान नहीं किया गया तो उसके खिलाफ अनुशासनात्मक कार्रवाई अमल में लाई जाएगी। इसके साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि सभी डिपो धारक अपने-अपने उपभोक्ताओं को इस बारे में जागरूक करने का काम भी करें तथा डिपो पर ई केवाईसी की सूचना भी चस्पा करनी होगी। उन्होंने

कहा कि ई-केवाईसी का कार्य 10 जून तक पूरा करना होगा और इसका पूरा रिकॉर्ड भी संबंधित डिपो धारक को रखना होगा।

जिला खाद्य एवं पूर्ति नियंत्रक महेश यादव ने बताया कि राशन कार्ड धारक परिवार के पास ई-केवाईसी पूरा करवाने के लिए राशन कार्ड होना बहुत जरूरी है। इसके साथ ही आधार कार्ड और उन सभी परिवार वालों के आधार कार्ड जिनकी आप केवाईसी करवाना चाहते हैं। सभी प्रकार के दस्तावेज पूरे होने के बाद बायोमेट्रिक वेरिफिकेशन किया जाएगा। इसके बाद राशन कार्ड चालू रहेगा। उन्होंने कहा कि जून माह के राशन का वितरण खाद्य आपूर्ति निरीक्षक व डिपो की निगरानी कमेटी सदस्य की उपस्थिति में ही किया जाएगा। इस बारे सभी डिपो धारकों को विभागीय निर्देशों की पालना करनी होगी। उन्होंने डिपोधारक डिपो का संचालन विभागीय हिदायतों अनुसार करते हुये कार्डधारकों के साथ मिलनसार व्यवहार करेंगें व विनम्रता के साथ पेश आयेंगें।

बैठक में निर्देश दिए गए कि सभी डिपोधारक पोली बेगस (प्लास्टिक के थेले) कॉन्फैड में वापिस जमा करेंगें, ताकि बाढ इत्यादि की स्थिति में आवश्यक प्रबंधों हेतू उनका प्रयोग किया जा सके। उन्होंने कहा कि राशन वस्तुओं की राशि जमा करने बारे सभी डिपोधारक राशन वस्तुओं की अग्रिम राशि प्रत्येक मास की 15 तारीख तक कॉन्फैड में स्वयं के बैंक खाते के कार्ड से जमा करना सुनिश्चित करेंगें। डिपो कार्य स्थल बारे सभी डिपोधारक डिपो का कार्य स्थल हरियाणा सार्वजनिक

वितरण प्रणाली (अनुज्ञप्ति एवं नियंत्रण) आदेश-2022 की हिदायतों अनुसार रखेंगें। यह भी संज्ञान में हैं कि कुछ डिपो कार्य स्थल संकरी गली में स्थित है व उनके सामने महिला व पुरुष के लिए पंक्ति हेतू पर्याप्त जगह नहीं हैं तथा दो मास के राशन भण्डारण हेतू भी स्थल छोटा पड़ता है। जिस डिपोधारक द्वारा कार्य स्थल बदलवाया जाना है। इस बारे जिला खाद्य एवं पूर्ति नियंत्रक को नक्शे सहित आवेदन करना सुनिश्चित करें। प्रतिभूति राशि के संदर्भ में सभी डिपोधारक हरियाणा सार्वजनिक वितरण प्रणाली (अनुज्ञप्ति एवं नियंत्रण) आदेश - 2022 की हिदायतो अनुसार 20 हजार रुपए प्रतिभूति राशि अतिशीघ्र जमा करवाना सुनिश्चित करें। बाजरा वापिस कॉन्फैड मे जमा करवाने बारे सभी डिपोधारक मुख्यालय के निर्देशों अनुसार डिपो पर बकाया बाजरा कॉन्फैड में वापिस विभागीय हिदायतों अनुसार जमा

दिव्यांगजनों ने पौधारोपण और स्वच्छता कार्यक्रम चला कर मनाया विश्व पर्यावरण दिवस

समाचार गेट/अनिल मोहनिया

नूंह। विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर दिव्यांगजनों, रूप ऑटोमोटिव्स लिमिटेड, हरियाणा राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, रूप पॉलिमर, दत्त मेडिको प्रोडक्ट, और रोजका मेव इंडस्ट्रियल एरिया के अन्य उद्योग, साथ ही सहास एनजीओ, कैरिटास इण्डिया एनजीओ, और रूप बीके जैन फाउंडेशन के संगठन ने रोजका मेव गॉव और इसके औद्योगिक क्षेत्र में 3 दिनों तक एक महापुनः सफाई अभियान का आयोजन किया।उद्योगों और एनजीओ सदस्यों के संयुक्त प्रयासों के साथ, हमने सिर्फ 3 दिनों में 60 क्विंटल (6000 किलोग्राम) की कचरा निकाली इस आयोजन में, विभिन्न कंपनियों के प्रतिष्ठित मेहमानों ने लोगों को पर्यावरण की संरक्षण में सशक्त किया। ''हमारा कूड़ा-हमारी जिम्मेदारी'' और ''स्वाक्ष गांव-पहचान हमारी'' जैसे नारे समुदाय में गूँजे, जिससे कचरा प्रबंधन की व्यक्तिगत जिम्मेदारी को बल मिला। कार्यक्रम में दिव्यांग जनों ने भी अपनी भागीदारी की इस अवसर

पर विपिन कुमार, क्षेत्रीय अधिकारी एचएसपीसीबी, मनीष यादव, एसडीओ एचएसपीसीबी, अरविंद चौरसिया डीजीएम रूप ऑटोमोटिव , रतन पाल खटाना, अध्यक्ष आईएमटी सोहना और एनयूएच इंडस्ट्रियल एरिया, सुरेंद्र रूप पॉलिमर से, वीरेंद्र रूप पॉलिमर से साथ ही सहास और कैरिटास इण्डिया टीमें सिक्रय रूप से भाग लिया और पर्यावरण की ओर समर्थन देने के लिए 40 पेड़ लगाए।यह सहकारी प्रयास हमारी संगठनात्मक प्रतिबद्धता को सरिक्षत और प्राकृतिक संरक्षण के लिए सुरिक्षत करता है इस मौके पर कैरिटास इंडिया के परियोजना विस्तार सहयोगी राजकुमार ने बताया कि हर वर्ष की भांति इस बार भी दिव्यांगजनों द्वारा मानसून सत्र में करीब 500 पेड़ लगाई जायेंगे। और उनके रखरखाव की जिम्मेदारी दिव्यांगजनों द्वारा की जाएगी

आमजन को किया साइबर अपराधों के बारे जागरूक

समाचार गेट/हरिओम भारद्वाज

होडल। पुलिस कप्तान डॉ अंशु सिंगला आईपीएस के मार्गदर्शन में जिला पुलिस लगातार कर रही है आमजन को साइबर अपराध प्रति जागरूक। जागरूकता से ही साइबर अपराध से बचा जा सकता है। साइबर ठगी होने पर डायल 1930 कर अपनी शिकायत रजिस्टर्ड करा कर ठगी किए गए पैसे पा सकते हैं वापिस।

माननीय पुलिस महानिदेशक, हरियाणा के प्रति माह प्रथम बुधवार साइबर अपराध के प्रति जागरूकता अभियान चलाने के आदेशों की अनुपालना में पुलिस अधीक्षक पलवल डॉ अंशु सिंगला के निर्देशानुसार आज जून महीने के प्रथम बुधवार साइबर क्राइम थाना पलवल प्रभारी निरीक्षक नवीन कुमार की टीम में तैनात सहायक उप निरीक्षक संदीप कुमार के नेतृत्व में साइबर क्राइम थाना की टीम जिसमें हेड कांस्टेबल महेश कुमार, निखिल तथा सिपाही लाल सिंह शामिल है ने होडल के गांव नंगला गुदराना में साइबर अपराध, महिलाओं व बच्चों के विरुद्ध होने वाले अपराधों के बारे में जागरूक किया। पुलिस अधीक्षक पलवल डॉ अंशु सिंगला आईपीएस के कुशल-मार्गदर्शन मे जिला पलवल पुलिस की

टीमें पिछले काफी समय से जिले के अधिकतर स्कूलों/कॉलेजों एवं गांवों में इस तरह के जागरूकता अभियान चला चुकी हैं। जागरूकता अभियान के दौरान साइबर विशेषज्ञ एवं सहायक उप निरीक्षक संदीप कुमार ने बतलाया कि आज के समय साइबर अपराध चरम पर है आए दिन नए-नए तरीकों से लोगों को ठगा जा रहा है। इन्हें रोकने के लिए जागरूक होने की जरूरत है। सभी को समझना होगा कि साइबर अपराध करने वाले लोग बडे ही चालाक किस्म के हैं जिनसे सभी को बचना होगा। वैसे जिला पलवल में साइबर क्राइम थाना पलवल, साइबर सैल और साइबर हेल्प डेस्क गठित है, जो लगातार इस दिशा में काम रही है।

इसके लिए बड़े सोशल प्लेटफॉर्म को सावधानी और सतर्क ता के साथ प्रयोग करना जरूरी है। आज जिस तरह से अपराधियों के द्वारा साइबर अपराध को अपराध का एक सशक्त माध्यम बनाकर प्रयोग किया जा रहा है। उससे बचने के लिए छात्रों को स्वयं जागरूक होकर दूसरों को भी जागरूक करना होगा। इस दौरान उन्होंने साइबर क्राइम संबंधित संचार साथी पोर्टल तथा टेफको पोर्टल के बारे में भी बताया जिसमें अपना फोन नंबर इंटर करके यह पता लगाया जा सकता है कि एक आदमी के नाम से कितने सिम जारी हुई अगर कोई सिम आपने जारी नहीं करवाई है तो आप उसको उक्त पोर्टल पर रिपोर्ट करके बंद करवा सकते हैं। इस दौरान साइबर विशेषज्ञ ने आधार इनेबल्ड पेमेंट सिस्टम ऑनलाइन वित्तीय ठगी से बचाव, फेसबुक हैकिंग, बारकोड के माध्यम से होने वाले फ्रॉड, व्हाट्सएप हैकिंग से बचाव, फर्जी वेबसाइट से होने वाले फ्रॉड के संबंध में सावधानियां बरतने की सलाह दी। फेसबुक, इंस्टाग्राम, व्हाट्सएप आदि सोशल साइट्स से हनी ट्रैप के संबंध में कॉलेज स्टाफ एवं छात्राओं को जागरूक रहने के लिए कहा गया। सिम कार्ड के माध्यम से, एटीएम कार्ड बदलकर, डेबिट कार्ड, क्रेडिट कार्ड के माध्यम से, बायोमैट्रिक, क्यूआर कोड स्कैन, सोशल मीडिया पर अनजान व्यक्ति से दोस्ती, फर्जी कॉल, अनजान व्हाट्सएप वीडियो कॉल, ऑनलाइन लोन देने वाले ऐप, सोशल मीडिया पर रुपयों की मांग करने वालों से, गूगल से कस्टमर केयर नंबर सर्च करने बारे, यूपीआई संबंधी फ्राड के प्रति एवं साइबर ठगी होने पर साइबर राष्ट्रीय हेल्पलाइन नंबर 1930 बारे भी जागरूक किया गया। जागरूकता सेमिनार के दौरान करीब 100 ग्रामीण मौजूद रहे जिनमें से करीब 30 महिलाएं थी। ग्रामीणों ने साइबर अवेयरनेस के बाद साइबर टीम का धन्यवाद किया।

आईटीआई में 7 जून से 21 जून तक ऑनलाइन करें आवेदन

समाचार गेट/अनिल मोहनिया

नूंह। बीसरू रोड पर स्थित आईटीआई में एडमिशन के लिए आवेदन प्रक्रिया जून से शुरू हो जाएगी। एडमिशन के इच्छुक छात्र आईटीआई में आकर व ऑनलाइन पोर्टल के माध्यम से आवेदन कर सकते हैं। आईटीआई से संबंधित जानकारी के लिए आईटीआई में हेल्पडेस्क लगाए गए है। पुन्हाना राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान के प्रधानाचार्य विजय कुमार ने बताया कि दाखिला लेने के लिए आवेदन प्रक्रिया 7 जून से शुरू होगी। ऑनलाइन आवेदन करने की अंतिम तिथि 21 जून है। आवेदन करने के लिए आवेदनकर्ता के पास अपना मोबाइल नंबर, आधार कार्ड, ईमेल आईडी व परिवार पहचान पत्र होना अनिवार्य है। विजय कुमार ने बताया कि हरियाणा सरकार की तरफ से छात्राओं के लिए फ्री बस पास की सुविधा व ट्यूशन फीस माफ है। प्रत्येक ट्रेड में छात्राओं के लिए 30 प्रतिशत सीट आरक्षित हैं। विभिन्न इंजीनियरिंग ट्रेड्स में छात्राओं के दाखिला लेने पर 500 रुपये प्रति माह की राशि दी जाएगी। आईटीआई में इलेक्ट्रीशियन, फिटर, मशीनिस्ट, रेफ्रिजरेशन और एयर कंडीशनिंग, ड्राफ्ट्समैन सिविल, मैकेनिक मोटर वाहन, मैकेनिक डीजल, प्लास्टिक प्रोसेसिंग ऑपरेटर, स्टेनो हिंदी, प्लम्बर और वेल्डर आदि ट्रेड्स में दाखिले होंगें।

विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर तावडू अनाज मंडी में हुआ पौधारोपण कार्यक्रम: एसडीएम संजीव कुमार

समाचार गेट/अनिल मोहनियां

नूंह। विश्व पर्यावरण दिवस का आयोजन आज अनाज मंडी तावडू किया गया। इस कार्यक्रम का आयोजन संजय गोयल, प्रधान अनाज मंडी तावडू श्यामसुन्दर शास्त्री, समाजसेवा तावडू एवं एन.जी.ओ. एम3एम फाउण्डेशन द्वारा किया गया था तथा जिला प्रशासन तावडू एवं वन विभाग द्वारा सहायोग किया गया।

विशिष्ट अतिथि एसडीएम तावडू संजीव कुमार तथा डीएसपी मुकेश कुमार एवं जिला वन अधिकारी प्रदीप गुलिया भी कार्यक्रम में उपस्थित रहे। कार्यक्रम के आयोजन में शहर के जागरूक पर्यावरण प्रेमियो द्वारा बढ़चढ़कर भाग लिया गया विशेषकर महिलाओ द्वारा। श्यामसुन्दर शास्त्री, समाजसेवा तावडू द्वारा 108 पौधे बढ़, पीपल, नीम, जामुन, पिलखन आदि प्रजातियों के उपलब्ध करवाये गये तथा वन विभाग द्वारा गढढे आदि तैयार करवाये गये, जिनमें महिलाओं द्वारा गीत गाकर पौधे रोपित किये गये।

एसडीएम संजीव कुमार द्वारा कार्यक्रम के अपने सम्बोधन में आमजन को जागरूक करते हुये सम्बोधित किया कि विश्व पर्यावरण दिवस समारोह जिसका विषय "हमारी भूमि, हमारा भविष्य"

होगा। यह विषय भूमि और प्राकृतिक प्रणालियों को बहाल करने, जैव विविधता की रक्षा करने और जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए आवश्यक सामूहिक प्रयास पर जोर देता है।

विश्व ने पहली बार 5 जून 1973 को विश्व पर्यावरण दिवस मनाया। जो पर्यावरण संरक्षण और पर्यावरण जागरूकता के लिए एक ऐतिहासिक शिखर सम्मेलन था। पर्यावरण संरक्षण के लिए सभी को प्रेरित किया और बताया कि प्रतिदिन बढ़ती हुई गर्मी, व्यर्थ बहते पानी लगातार बर्फ बारी की कटाई और फसलों में अत्यधिक कीटनाशक के छिडकाव आदि के कारण पर्यावरण संतुलन बिगड़ रहा है। जिला वन अधिकारी प्रदीप गुलिया द्वारा बताया गया कि जिले में वन विभाग द्वारा अच्छे पौधारोपण कार्य करवाये जाते रहे है, जिनमें मुख्यतः सिल्खो, टपकन, छारेड़ा, सहशोला, सादई आदि अरावली पहाड के उपर के क्षेत्र है, जहाँ पर क्षेत्रीय प्रजातियो जैसे नीम, गुल्लर, जामुन आदि का सफल पौधारोपण पूर्व वर्षों में किया गया बढ़ा लिये हुये है तथा अपनी हरियाली से अरावली पहाड़ी की शोभा बढ़ा रहे है एवं इस वर्ष जो कि आज अच्छी मानसून सीजन में भी स्कूली बच्चो, पर्यावरण प्रेमी संस्थाओं तथा आमजन को विभाग की नर्सरियों से पौधे निःशुल्क रोपित करने हेतू उपलब्ध करवाये जायेंगे।

कार्यक्रम में संजय गोयल, प्रधान अनाज मंडी तावडू एम3एम फाउण्डेशन के प्रतिनिधि तथा वन विभाग के फोरेस्ट रेंज देव कुमार आदि उपस्थित रहे।

आईआईटी गांधीनगर से प्रशिक्षित नूह के सरकारी स्कूलों के शिक्षक नए तरीके से पढ़ाएंगे मैथ एवम सांइस

नूंह से 5 अध्यापक एवं डीएसएस ने किया हिस्सा

समाचार गेट/अनिल मोहनिया

नूंह। जिले से सरकारी स्कूलों के पांच अध्यापकों को साइंस व मैथ के नए-नए टिप्स सिखाने के लिए आईआईटी गांधी नगर के प्रशिक्षण शिविर में शिक्षा विभाग की ओर से भेजा गया था जो आज नूंह पहुंच चुके है। जिन्होंने आईआईटी गांधीनगर में एक्सपर्ट के माध्यम से स्पेशल ट्रेनिंग ली है। इसमें इन शिक्षकों ने नए-नए व आधुनिक साइंस व मैथ के टिप्स सीखे है जो अब जिले के बाकी शिक्षको को प्रशिक्षित करेंगे ताकि आने वाले में समय में बच्चों को शिक्षक मजे मजे में गणित एवम विज्ञान को रुचिकर तरीके से पढ़ा सकें। दर असल, राज्य शैक्षणिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद गुडगांव (एससीईआरटी) की ओर से प्रशिक्षण शिविर के लिए प्रदेश के करीब 100 अध्यापकों का चयन किया गया है। जिनमें नूंह जिले के भी 05 अध्यापक एवम डीएसएस को शामिल किया था। ट्रेनिंग से प्रशिक्षण लेकर आए जिला विज्ञान विशेषज्ञ रामकिशन आर्य ने बताया की आईआईटी में क्रिएटिव लिर्निंग सेंटर बनाया गया है। प्रशिक्षण के दौरान बताया गया कि किस प्रकार

से नई तकनीक का इस्तेमाल करके विद्यार्थियों के दोनों विषयों में रुचि को बढ़ाया जा सकता है।

प्रशिक्षण ले चुके पांचों शिक्षक जिले के अन्य अध्यापकों को ट्रेनिंग देंगे। इसके अलावा बताया की कि पांच शिक्षको में गणित और विज्ञान के शिक्षको को शामिल किया था जिसमें पाटखोरी स्कूल से पीजीटी बायोलॉजी डॉ पवन यादव, हसनपुर तावडू से पीजीटी बायोलॉजी किरण यादव, मॉडल संस्कृति स्कूल तावडू से ही पीजीटी गणित रामकांत एवम राजेश, आटा बरोटा स्कूल से पीजीटी फिजिक्स हरदीप को चयन करके भेजा गया। प्रशिक्षण के अंतिम दिन एससीईआरटी निदेशक सुनील बजाज ने सभी शिक्षको को मोटिवेट किया और कहा की लिए गए ज्ञान और प्रयोगों को आप सभी सरकारी स्कूलों के बच्चों तक पहुंचा कर इनका लाभ पहुंचाना है।

मानव रचना में पर्यावरण की सुरक्षा और संरक्षण के लिए बुद्धिजीवियों ने रखे विचार

विश्व पर्यावरण दिवस पर "सस्टेनेबिलिटी फॉर इन्वॉयरमेंट" पर जागरूकता व्याख्यान का हुआ आयोजन

समाचार गेट/एजेंसी

फरीदाबाद। मानव रचना शैक्षणिक संस्थान (एमआरईआई) में विश्व पर्यावरण दिवस पर डॉ. ओपी भल्ला फाउंडेशन और ईको क्लब फरीदाबाद की ओर से जागरूकता व्याख्यान का आयोजन किया गया। ''सस्टेनेबिलिटी फॉर इन्वॉयरमेंट'' थीम पर आयोजित हुए इस सेमिनार में शहर के उद्योगपतियों, आरडब्ल्यूए पदाधिकारियों, महिलाओं और वरिष्ठ नागरिकों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। लोगों को पर्यावरण संरक्षण के प्रति सजग और जागरूक बनाना ही कार्यक्रम का मकसद रहा।

कार्यक्रम की शुरुआत करते हुए डॉ. ओपी भल्ला फाउंडेशन के वाइस चेयरमैन डॉ. एनसी वाधवा ने सभी वक्ताओं और अतिथियों का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि संयुक्त राष्ट्र महासभा ने साल 1972 में स्टॉकहोम कांफ्रेंस के दौरान 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस घोषित किया था। इसका मकसद पर्यावरणीय स्थिति को लेकर मंथन करना और इसे बेहतर बनाने के प्रयासों पर चर्चा करना है। उन्होंने कहा कि जिस तरह पूर्वजों ने हमारे लिए प्राकृतिक संसाधन छोड़े थे, उसी तरह हमें भी भावी पीढ़ी के लिए संसाधन सहेजने का प्रण लेना होगा।

कार्यक्रम की विशिष्ट अतिथि रहीं आकांक्षा तंवर, क्षेत्रीय अधिकारी, प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, बल्लभगढ़ ने कहा कि शहरीकरण, अंधाधुंध विकास और बढ़ती जनसंख्या प्राकृतिक संसाधन दोहन के मुख्य कारण हैं। हरियाली बढ़ाने के लिए मियावाकी तकनीक के बारे में जानकारी दी। उन्होंने कहा कि हर कोई आदतों में बदलाव कर पर्यावरण संरक्षण में सहयोग दे सकते हैं। कार पूलिंग, पानी का सदुपयोग, रिसाइकल और रियूज जैसी आदतें पर्यावरण संरक्षण में सहायक हैं। ऑल इंडिया फोरम ऑफ एमएसएमई के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्याम सुंदर कपूर ने कहा कि पर्यावरण दूषित करने करने वालों के लिए सख्त सजा का प्रावधान होना चाहिए। उन्होंने सभी लोगों से जनमिदन पर पौधे लगाने का संकल्प लेने की अपील की। संस्था के राष्ट्रीय महासचिव अनिल कुमार चौधरी ने कहा कि उद्योग कॉरपोरेट सोशल रिस्पॉन्सबिलिटी (सीएसआर) के तहत पर्यावरण संरक्षण में सहयोग दे सकते हैं। एसोसिएट प्रो. डॉ. महक शर्मा ने सभी को सस्टेनेबल फूड व डाइट के बारे में जागरूक किया। डॉ. शिल्पी गुप्ता, साइंटिस्ट, केंद्रीय भूजल प्राधिकरण (सीजीडब्ल्यूए) ने भूजल रिचार्ज के लिए रेन वॉटर हार्वेस्टिंग सिस्टम और बारिश के पानी को स्टोर करने के तरीकों के बारे में विस्तार से जानकारी दी। ईको क्लब की अध्यक्ष नीता गुप्ता ने कहा कि छोटे-छोटे प्रयासों से हम जल संरक्षण में सहयोग दे सकते हैं। आरओ और एसी से निकलने वाला पानी घरेलू कामों में इस्तेमाल कर, दाल-चावल या सब्जियां धोने के पानी को सफाई में इस्तेमाल कर, कार धोने के लिए पाइप की जगह बाल्टी इस्तेमाल कर काफी पानी बचाया जा सकता है। डॉ. प्रीति राव, अध्यक्ष, बायो-एंजाइम एंटरप्रेन्योर्स एकेडमी ऑफ इंडिया ने लोगों को बायो एंजाइम की अहमियत के बारे में बताया। डॉ. निधि डिडवानिया, डायरेक्टर, मानव रचना औषधीय पादप रोग विज्ञान केंद्र (एमआरसीएमपीपी) ने उपस्थित लोगों को औषधीय पौधों के बारे में जानकारी दी। साथ ही पौधों के स्वास्थ्य लाभों के बारे में बताते हुए इनकी सही देखभाल की जानकारी भी दी। ईको क्लब से शालिनी अग्रवाल और सोनाली सारस्वत ने सस्टेनेबल इलेक्टिसिटी और कचरा प्रबंधन के बारे में जागरूक किया।

मोटिवेशनल स्पीकर डॉ. पंकज ग्रोवर ने कहा कि लोगों को अपने अधिकारों के साथ कर्तव्यों के बारे में भी जागरूक होना होगा।

गुर्जर की जीत से फरीदाबाद के विकास को मिलेगी और गति : गोल्डी अरोड़ा

समाचार गेट/एजेंसी

फरीदाबाद। फरीदाबाद से लगातार तीसरी बार एक लाख 72 हजार 914 मतों से ऐतिहासिक जीत दर्ज करने पर भाजपा के जिला सचिव गोल्डी अरोड़ा ने आज नवनिर्वाचित सांसद कृष्णपाल गुर्जर को उनके सेक्टर-28 स्थित कार्यालय पर पहुंचकर फूलों का गुलदस्ता भेंट करके और उनका मुंह मीठा कराकर बधाई दी। उन्होंने कहा कि श्री गुर्जर ने यह जीत हासिल करके एक नया कीर्तिमान रचने का काम किया है क्योंकि पूर्व सांसद रामचंद्र बैंदा के बाद कृष्णपाल गुर्जर ही ऐसे सांसद बने है, जिन्होंने लगातार तीसरी बार फरीदाबाद से जीत हासिल की है। यहां जारी प्रेस बयान में गोल्डी अरोड़ा ने कहा कि कृष्णपाल गुर्जर की इस जीत के साथ ही फरीदाबाद के विकास को और गति मिलेगी और यह जिला फिर से देश के मानचित्र पर चमकेगा। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व पर जनता ने अपने विश्वास की मोहर लगाई और फरीदाबाद से कृष्णपाल गुर्जर को तीसरी बाद संसद में भेजकर मोदी जी के हाथों को मजबूत करने का काम किया है। उन्होंने कहा कि चुनावों ने जिस प्रकार से भाजपा के एक-एक कार्यकर्ता ने दिन-रात मेहनत करके पार्टी के लिए कार्य किया, उसका परिणाम सामने है और कृष्णपाल गुर्जर ही इतने बड़े मार्जिन से जीत हासिल करने में सफल रहे। उन्होंने आशा जताई कि पिछली दो बार की तरह इस बार भी कृष्णपाल गुर्जर को मोदी कैबिनेट में स्थान मिलेगी और फरीदाबाद का गौरव बढ़ेगा।

जहां उसके खाने पीने और पहनने का सारा इंतजाम नवजन मोर्चा समिति (रजि0) की देखरेख में किया

संक्षिप्त समाचार

आरोपी को देसी कट्टे सहित किया गिरफ्तार

समाचार गेट/एजेंसी

फरीदाबाद। अपराध शाखा सेक्टर-48 प्रभारी हिमांशु की टीम ने अवैध हथियार सहित आरोपी को गिरफ्तार किया है।

पुलिस प्रवक्ता ने बताया कि गिरफ्तार किए गए आरोपी का नाम मोनू है जो ऐसी नगर का रहने वाला है। क्राइम ब्रांच की टीम ने गुप्त सूत्रों की सूचना के आधार पर कार्रवाई करते हुए आरोपी को अवैध हथियार सहित एसजीएम नगर थाना एरिया से काबू किया था। आरोपी के कब्जे से एक देसी कट्टा तथा एक जिंदा कारतूस बरामद किया गया। आरोपी के खिलाफ थाने में अवैध हथियार अधिनियम की धाराओं के तहत मुकदमा दर्ज करके पूछताछ की गई जिसमें सामने आया कि आरोपी हवाबाजी करने के लिए मथुरा से 7000 में यह देसी कट्टा खरीदकर लाया था। आरोपी अपने दोस्तों में दबदबा बनाने के लिए इसे अपने पास रखता था। पुलिस पूछताछ पूरी होने के पश्चात आरोपी को अदालत में पेश करके जेल भेज दिया गया है।

अपराध शाखा सेक्टर 48 ने नशे के 6 इंजेक्शन सहित आरोपी को किया गिरफ्तार

समाचार गेट/एजेंसी

फरीदाबाद। अपराध शाखा सेक्टर 48 प्रभारी हिमांशु की टीम ने अवैध नशे सहित एक आरोपी को गिरफ्तार किया है।

पुलिस प्रवक्ता ने बताया कि गिरफ्तार किए गए आरोपी का नाम धर्मेंद्र है जो गुरुग्राम के सोहना का रहने वाला है।

क्राइम ब्रांच की टीम ने गुप्त सूत्रों की सूचना के आधार पर आरोपी को मुजेसर एरिया से अवैध नशे सहित काबू किया था।

आरोपी के कब्जे से नशे के 6 इंजेक्शन बरामद किए गए।

शहर को हरा-भरा प्रदूषण रहित बनाना हम सबका दायित्व : आर.के. चिलाना

समाचार गेट/एजेंसी

फरीदाबाद। विश्व पर्यावरण दिवस पर टाइम इक्विपमेंट प्रा. लि. (टाटा हिताची) इंडस्ट्रियल एरिया एनआईटी फरीदाबाद में पौधारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में कंपनी के डायरेक्टर आर. के. चिलाना ने पौधारोपण किया और उपस्थित कर्मचारियों से आह्वान किया कि वह अपने परिवार सहित पांच-पांच पौधे अवश्य लगाएं और उनकी पेड़ बनने तक देखभाल करें। उन्होंने कहा कि प्रदूषण होता वातावरण मानव जाति के लिए हानिकारक है और इसे हम अधिक से अधिक पेड़-पौधे लगाकर ही शुद्ध रख सकते है इसलिए हम सभी का नैतिक दायित्व बनता है कि हम सभी अपने घरों, मोहल्लों, पार्कों व आसपास खाली जगहों पर पेड़-पौधे रोपने चाहिए क्योंकि जितने ज्यादा पेड़ पौधे पृथ्वी पर रहेंगे, उतनी ही हमें आक्सीजन मिलेगी और हम बीमारियों से मुक्त रहेंगे। उन्होंने कहा कि यदि पौधे है तो प्राण हैं। पौधों के बिना प्राण की कल्पना भी नहीं की जा सकती। आज हमने सैकड़ों पौधे लगाए गए है और इन पौधों की तब तक देखभाल की जाएगी, जब तक यह विशाल पेड़ों का रुप न ले ले। उन्होंने कहा कि कहा पौधों का सीधा सरोकार जीव जगत से है। प्रकृति की समृद्धि मानव जाति ही नहीं, बल्कि संपूर्ण ब्रह्मांड के लिए जरूरी है। पौधे लगाना जितना जरूरी है, उतनी ही जरूरी उनकी देखभाल भी है इसलिए सभी पौधे लगाने के साथ ही उसकी देखभाल भी अवश्य करे। यह काम सब करेंगे तो फरीदाबाद को हरा भरा और प्रदूषण रहित बनाने का सपना जरूर पूरा होगा और फरीदाबाद देश के स्वच्छ शहरों में शुमार होगा। इस मौके पर कई लायंस क्लब सीनियर मेंबर्स ने भी पौधारोपण किया। इस अवसर पर लायन ए आर बोहरा ,लायन एस पी सचदेवा ,लायन आई एस कटारिया लायन प्रदीप गर्ग, लायंस क्लब फरीदाबाद ओल्ड की ओर से लायन उमेश पांचाल,ध्रुव खोसला ,बलराम धिंमरे ,सनी ग्रोवर,राकेश भाटी, भारत ,अरविन्द त्यागी ,विष्णु सिंह ने जहां पौधारोपण किया और उपस्थित सभी लोगों ने शहर को स्वच्छ और प्रदूषित रिहत बनाने के लिए प्रण लिया।

सुधा रस्तोगी डेंटल कॉलेज में छात्रों को यातायात नियमों के प्रति किया जागरूक

समाचार गेट/एजेंसी

फरीदाबाद। डीसीपी ट्रैफिक ऊषा के निर्देशानुसार नागरिकों को सड़क सुरक्षा, यातायात नियमों के बारे में लगातार जागरूक किया जा रहा है। इसी क्रम में आज एसीपी ट्रैफिक जितेश मल्होत्रा एवं ट्रैफिक इंस्पेक्टर सतीश कुमार द्वारा सुधा रस्तोगी डेंटल कॉलेज, खेड़ी कलां फरीदाबाद में 100 से अधिक छात्रों को यातायात नियमों एवं सड़क सुरक्षा के प्रति जागरूक किया गया।यातायात नियमों के प्रति जागरुक करते हुए एसीपी ट्रैफिक ने बताया कि सड़क सुरक्षा और यातायात नियम सभी लोगों की सुरक्षा और सुविधा के लिए महत्वपूर्ण होते हैं। सड़कों पर होने वाले दुर्घटनाओं की संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ रही है और इसका सीधा असर हमारे जीवन और समाज पर पड़ता है। यातायात नियमों का पालन करना सड़क सुरक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। वाहन चालक यातायात नियमों का पालन करना सुनिश्चित करें जैसे कि यात्री को सीट बेल्ट का उपयोग करना और वाहन चालक को दिए गए स्पीड लिमिट का पालन करना, शराब पीकर गाड़ी न चलाना, रेड लाइट पर रुकना, सीधे जाने का नियमित पालन करना इत्यादि।

यथार्थ हॉस्पिटल ने मनाया विश्व पर्यावरण दिवस, वृक्षारोपण अभियान का आयोजन

समाचार गेट/एजेंसी

फरीदाबाद। आज, यथार्थ सुपर स्पेशिलटी हॉस्पिटल फरीदाबाद ने विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर वृक्षारोपण अभियान का आयोजन किया। इस अभियान के अंतर्गत डॉ. विजय अग्रवाल, डॉ. समीर गुप्ता, डॉ. अंकुर धिमान, डॉ. चंचल गुप्ता, डॉ. विनय कुमार पांडे, एवीपी श्री कृष्ण कुमार झा, एच.आर. हेड श्री अभिमन्यु, ऑपरेशन्स हेड श्री प्रभास रंजन, डीजीएम डॉ. अनुज त्यागी और सभी टीम सदस्यों ने मिलकर वृक्षारोपण किया और इन पेड़ों को गोद लिया।यथार्थ सुपर स्पेशिलटी हॉस्पिटल के प्रतिनिधि शिवम वर्मा और एवीपी-मार्केटिंग श्री कृष्ण कुमार झा ने बताया कि पर्यावरण को बचाना हमारी जिम्मेवारी है और हम सुनिश्चित करेंगे कि हम जितना संभव हो सके, उतने पेड़ लगाएं और उनकी देखभाल करें।श्री कृष्ण कुमार झा ने कहा, "पर्यावरण संरक्षण हमारे स्वास्थ्य के लिए महत्वपूर्ण है और हम इस दिशा में निरंतर प्रयास करते रहेंगे।

तीव्र गर्मी में रखे बच्चों व बुजुर्गो का खास ख्यालः उपायुक्त विक्रम सिंह

समाचार गेट/एजेंसी

फरीदाबाद। जिला उपायुक्त विक्रम सिंह ने शहरवासियों से अनुरोध करते हुए कहा की आम जन को बिना किसी जरुरी काम के घर से बाहर न निकलें, और खास तौर पर बुजुर्गों और बच्चो पर विशेष रूप से ध्यान देने की आवश्यकता है क्योंकि यह गर्म हवाएं इनके लिए खतरा हो बन सकती है। विक्रम सिंह ने बताया की मौसम विभाग द्वारा गर्मी के मौसम के मद्देनजर अलर्ट जारी किया गया है। जिसका हम सभी को पालन करना है और सभी जरूरी कार्यों को सुबह व शाम के समय में ही करना है।

डीसी ने बताया कि जून के महीने में जिला में भीषण गर्मी व लू (सिविर हीट वेव) का मौसम रहता है तथा रात के समय भी तापमान सामान्य से अधिक होता है। लू से बचाव के लिए पर्याप्त मात्रा में पानी पिएं, ओआरएस (ओरल रिहाइड्रेशन सॉल्यूशन), घर में बने पेय पदार्थ जैसे लस्सी, तोरानी (चावल का मांड) नींबू पानी, छाछ आदि का सेवन कर तरोताजा रहें। अपने घर को ठंडा रखें। पर्दे, शटर या सनशेड का इस्तेमाल करें और रात में खिड़कियां खुली रखें। कम कपड़े पहनें और बार-बार ठंडे पानी से स्नान करें। अपने पालतू जानवरों को छाया में रखें और उन्हें पीने के लिए भरपूर पानी दें। उनके लिए उचित छांव का प्रबंध करें। यदि किसी भी व्यक्ति को गर्मी के कारण चक्कर आए, उल्टी घबराहट अथवा तेज सिरदर्द हो, सीने में दर्द हो अथवा सांस लेने में कठिनाई हो तो तुरंत प्रभाव से चिकित्सक को दिखाएं।

बीजेपी की जीत पर सूरजपाल भूरा ने लड्डू बांट कर जताई खुशी

समाचार गेट/एजेंसी

फ़रीदाबाद। बीजेपी प्रत्याशी कृष्णपाल गुर्जर की प्रचंड जीत पर सरपंच ऐसोसिएशन के प्रधान एवं गांव चांदपुर के सरपंच सूरजपाल भूरा ने लड्डू बांट जीत की खुशी मनाई। उन्होंने कहा कि कृष्णपाल ने लगातार तीसरी बार फरीदाबाद लोकसभा क्षेत्र से जीतकर रिकॉर्ड बनाया है।

यह सभी कार्यकर्ताओं की जीत है और आने वाले हरियाणा के विधानसभा में भी भाजपा अपनी प्रचंड जीत से सरकार बनाएगी।

सरपंच सूरजपाल भूरा ने सभी को अस्वस्त किया कि अब हमारा फरीदाबाद फिर से विकास की गति पकड़ेगा।

शातिर चोर को गिरफ्तार कर सुलझाए 3 मामले

फरीदाबाद। अपराध शाखा सेक्टर-85 प्रभारी कैलाशचन्द की टीम ने चोरी के तीन मुकदमों में एक आरोपी को गिरफ्तार किया है।पुलिस प्रवक्ता ने बताया कि गिरफ्तार किए गए आरोपी का नाम इरशाद है जो मवई गांव का रहने वाला है। क्राइम ब्रांच की टीम में गुप्त सूत्रों की सूचना के आधार पर कार्रवाई करते हुए 31 मई को आरोपी को फरवरी 2024 के ऑटो चोरी के मुकदमे में मवई के पास से गिरफ्तार किया था।

आरोपी के कब्जे से चोरी का ऑटो बरामद किया गया जो उसने खेड़ीपुल एरिया में स्थित उमंग गार्डन से चोरी किया था।

पुलिस पूछताछ में आरोपी ने बताया कि उसने दिसंबर 2023 में आदर्श नगर एरिया से एक मोटरसाइकिल भी चोरी की थी।

पर्यावरण दिवस के अवसर पर महिलाओं व बच्चों द्वारा 75 साल से पुराने पेड़ों की पूजा की गई

ग्रामीणों ने पेड़ों की पूजा के साथ इनको बचाने का संकल्प लिया

समाचार गेट/एजेंसी

फरीदाबाद। उपायुक्त विक्रम सिंह के दिशा-निर्देशन में आज विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर वन विभाग फरीदाबाद वनमंडल द्वारा प्राण वायु देवता स्कीम के तहत 75 साल से पुराने पेड़ों की पूजा की गई7 इस दौरान जिन गांवों में पिचहत्तर वर्ष पुराने पेड़ थे उन गांवों में मौजूद व्यक्ति, महिलाएं, मंदिर के पुजारी, सरपंच, स्कूल के शिक्षक व बच्चों सहित अन्य लोगों ने मिलकर इन पेड़ों की पूजा के साथ साथ में इन पेड़ों को बचाने का संकल्प लिया। इस दौरान विभिन्न गांवों जैसे की छायंसा, मौजपुर, अटाली, पनेहरा, जसाना, नरियाला, हीरापुर इत्यादि गांवों में पेड़ों की पूजा की गई।

प्राणवायु देवता महोत्सव के दौरान महिलाओं ने पेड़ों को बचाने और पर्यावरण के संरक्षण को लेकर विभिन्न प्रकार के लोक गीत गाए। इसके अतिरिक्त बच्चों ने पेड़ों को बचाने के लिए शपथ ली। वन विभाग ने इस दौरान पेड़ों के आस पास पौधारोपण का समग्र अभियान चलाया जिसमें प्राणवायु पेड़ों के आस पास त्रिवेदी और पंचवटी वाटिका लगाना सुनिश्चित किया गया। फरीदाबाद और बल्लभगढ़ रेंज ने स्कूल के बच्चों और गांव के लोगों को सीड बॉल के पैकेट भी दिए ताकि बच्चे सीड बॉल को विभिन्न जगह फेंक सके और उसे प्राकृतिक पौधरोपण हो सके। प्राणवायु देवता कार्यक्रम में ग्रामीणों ने अग्रणी भूमिका निभाई। इस दौरान वन विभाग फरीदाबाद से वन विभाग के अधिकारी अफजल खान, वन मंडल अधिकारी सुनील कुमार। रविंद्र कुमार सहित सभी अधिकारियों और कर्मचारियों ने लोगों को पर्यावरण संरक्षण में अग्रणी भूमिका निभाना और पुराने पेड़ों को बचाने की अपील की।

संपादकीय

राजस्थान' लोकसभा, अपनों से हारी भाजपा

राजस्थान में लगातार दो बार क्लीन स्वीप करने वाली भाजपा इस बार अपनों से हार गई। लोकसभा चुनाव में जीत के प्रति अति आत्मविश्वास भाजपा के लिए नुकसानदायक रहा। केन्द्रीय नेतृत्व यह मान बैठा कि तीसरी बार राज्य में एकतरफा जीत होगी। यही आत्मविश्वास बड़े नेताओं की नाराजगी का कारण बन बैठा राज्य के बड़े नेताओं ने चुनाव से कन्नी काट ली।

नरवीर यादव
कार्यकारी संपादक

यह चुनाव मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नए कंधों पर आकर टिक गया।

अब भाजपा के कुछ दिग्गज विधायकों का खेल शुरू हुआ।

बस एक ही मकसद अपने लोग जीतें, बाकी प्रत्याशियों के साथ भितरघात पार्टी के अंदरूनी सूत्रों के अनुसार धौलपुर करौली, भरतपुर, सीकर, झुंझुनं चूरू, नागौर, टोंक-सवाई माधोपुर,

दौसा, बाड़मेर, बांसवाड़ा सीट पर अपने तमाम वजीरों को भाजपा प्रत्याशियों के खिलाफ ही सिक्रय कर दिया गया।

यह भितरघात भाजपा के लिए पुराना प्रदर्शन दोहराने में बाधा बन गया।

कांग्रेस इस मामले में कुछ हद तक भाजपा से बेहतर रही। हालांकि भाजपा से ज्यादा गुटबाजी और भितरघात कांग्रेस के बड़े नेताओं में कायम रही,

लेकिन लोकसभा 7 चुनाव में उसका ज्यादा असर नहीं पड़ा। पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत पूरे चुनाव के दौरान अपने बेटे वैभव गहलोत को जिताने के प्रयास में जालोर से ज्यादा बाहर नहीं निकल सके।

गहलोत ने राज्य में कुल 53 चुनावी सभा कीं। इनमें से अकेले जालोर में करीब 22 सभाओं को संबोधित किया।

ऐसे में सचिन पायलट और गोविंद सिंह डोटासरा ने चुनाव की कमान संभाल ली।

दोनों की जोड़ी ने पूरे चुनाव में कांग्रेस का माहौल बनाए रखा। कांग्रेस का अन्य दलों से गठबंधन के साथ एकजुटता से लड़ने का फार्मूला भी सफल रहा।

लोकसभा चुनाव में कांग्रेस ने उत्तरी-पूर्वी राजस्थान में शानदार प्रदर्शन किया।

उत्तरी राजस्थान के शेखावाटी की चूरू, झुंझुनं, सीकर और गठबंधन में नागौर लोकसभा सीट पर बाजी मारी, वहीं पूर्वी राजस्थान की दौसा, भरतपुर, धौलपुर करौली और टोंक सवाई माधोपुर सीट जीती।

वहीं पश्चिमी और दक्षिणी राजस्थान में एक-एक सीट जीतने में कामयाबी मिली है।

राज्य की 25 सीटों में से भाजपा ने 14 सीट जीतीं। कांग्रेस ने 8 और उसके सहयोगी दलों ने 3 सीटों पर बाजी मारी।

कांग्रेस का उत्तरी राजस्थान के शेखावाटी और पूर्वी राजस्थान में शानदार प्रदर्शन रहा।

लंबे समय बाद भाजपा-कांग्रेस के अलावा अन्य दलों ने 3 सीटें जीतीं चुनाव में किस्मत आजमा रहे लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला फिर जीतने के साथ संसद पहुंच गए हैं।

चार केन्द्रीय मंत्रिया

में से एक कैलाश चौधरी को बाड़मेर लोकसभा सीट से हार का सामना करना पड़ा।

लोकसभा चुनाव में एक दशक बाद कांग्रेस की वापसी का सेहरा प्रदेशाध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा और सचिन पायलट के सिर बंधा।

डोटासरा और पायलट के आक्रामक प्रचार की बदौलत कांग्रेस दोनों चरणों में प्रभावी नजर आई।

शेखावाटी में सीपीएम से गठबंधन और भाजपा के बागी राहुल कस्वां को टिकट दिलाने में डोटासरा ने अहम भूमिका निभाई।

इसी के दम शेखावटी से भाजपा का सूपड़ा साफ हो गया।

उधर, पायलट ने अपने

करीबी ब्रजेन्द्र ओला, भजनलाल जाटव, मुरारीलाल मीना, हरीश मीना, संजना जाटव और कुलदीप इंदौरा को न केवल टिकट दिलाए बल्कि उनकी जीत में भी अहम भूमिका निभाई।

प्रदेश में पिछले दो लोकसभा चुनावों में ज्यादातर उम्मीदवारों की जीत का अंतर लाखों में रहा है,

लेकिन इस बार ज्यादातर सीटों पर मतगणना के दौरान जयपुर ग्रामीण, झुंझुनूं नागौर, कोटा, जोधपुर में कोर्ट का मुकाबला देखने को मिला।

जयपुर ग्रामीण और झुंझुनूं में तो एक-दो बार रुझान ऊपर-नीचे भी हुआ। इससे उम्मीदवार और उनके समर्थकों की सांसें ऊपर नीचे होती रहीं।

इंदिरा के हत्यारे का बेटा से लेकर अमृतपाल खालिस्तानी भी जीते

समाचार गेट/एजेंसी

लोकसभा चुनाव 2024 के नतीजे घोषित हो चुके हैं और इस बार कई बड़े दिग्गज नेताओं को हार का सामना करना पड़ा है।

मोदी सरकार के कई मंत्रियों से लेकर कांग्रेस और अन्य पार्टियों के बड़े नेता चुनाव हार गए हैं।

लेकिन इस चुनाव में कुछ निर्दलीय उम्मीदवारों ने बड़े अंतर से जीत हासिल कर सबको चौंका दिया है।

इस बार कम से कम सात निर्दलीय उम्मीदवार संसद पहुंचे हैं, जो पिछले चुनावों की तुलना में अधिक हैं।

आइए जानते हैं उन निर्दलीय उम्मीदवारों के बारे में जिन्होंने इस बार बड़ी जीत दर्ज की है:

1. मोहम्मद हनीफा (लद्दाख): निर्दलीय उम्मीदवार मोहम्मद हनीफा ने कांग्रेस उम्मीदवार शेरिंग नामग्याल को 27,862 वोटों के अंतर से हराया।

2. इंजीनियर राशिद (बारामूला): इंजीनियर अब्दुल राशिद शेख ने जम्मू-कश्मीर के पूर्व मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला और पीपुल्स कॉन्फ्रेंस के सज्जाद गनी लोन को पराजित किया। राशिद ने

उमर अब्दुल्ला को दो लाख से अधिक वोटों के अंतर से हराया।

3. अमृतपाल सिंह (खडूर साहिब): खालिस्तानी नेता और वारिस पंजाब दे संगठन के प्रमुख अमृतपाल सिंह ने कांग्रेस के कुलबीर

सिंह जीरा को 1.97 लाख वोटों के अंतर से हराया।

4. उमेशभाई बाबूभाई पटेल (दमन और दीव): उमेशभाई बाबूभाई पटेल ने बीजेपी के लालूभाई बाबूभाई पटेल को 6,225 वोटों के अंतर से हराया

, जिससे 15 साल बाद बीजेपी की हार हुई।

6. सरबजीत सिंह खालसा (फरीदकोट): सरबजीत सिंह खालसा ने आम आदमी पार्टी के करमजीत सिंह अनमोल को 70 हजार से अधिक वोटों के अंतर से हराया।

सरबजीत सिंह खालसा पूर्व पीएम इंदिरा गांधी के हत्यारे बेअंत सिंह के बेटे हैं।

7. राजेश रंजन उर्फ पप्पू यादव (पूर्णिया): पप्पू यादव ने 56.75 लाख वोट प्राप्त कर अपने निकटतम प्रतिद्वंद्वी को 23,847 वोटों से हराया। पप्पू यादव इससे पहले भी दो बार निर्दलीय सांसद रह चुके हैं

और दोनों ही बार वह पूर्णिया से ही चुनाव जीते थे।

1957 के चुनाव में सबसे अधिक 42 निर्दलीय उम्मीदवारों ने जीत दर्ज की थी। 1952 में 37, 1962 में 20, 1967 में 35, 1971 में 14 और 1989 में 12 निर्दलीय उम्मीदवारों ने जीत हासिल की थी।

वहीं, 1991 के चुनाव में केवल एक निर्दलीय उम्मीदवार ने जीत हासिल की थी। इस बार के चुनाव परिणामों ने यह साबित कर दिया है कि निर्दलीय उम्मीदवार भी बड़ी राजनीतिक पार्टियों के सामने कड़ी चुनौती पेश कर सकते हैं और जनता का विश्वास जीत सकते हैं।

विशाल प्रकाशबाबू पाटिल (सांगली): विशाल (दादा) प्रकाशबाबू पाटिल ने बीजेपी के संजय काका पाटिल को एक लाख से अधिक वोटों के अंतर से हराया। विशाल पाटिल को 5.71 लाख से अधिक वोट मिले।

गर्मी के दिनों में यह गलती काफी भारी पड़ सकती है

समाचार गेट/एजेंसी

नई दिल्ली: पानी 5 मूल तत्व से बना है, जिसमें बड़ा हिस्सा जल का है। करीब 75 प्रतिशत शरीर केवल पानी है। इसका लेवल बिगड़ते ही बड़ी-बड़ी बीमारियां शुरू हो जाती हैं। कुछ लोग पानी पीने के बावजूद डिहाइड्रेशन से जूझते रहते हैं। ऐसा सही टाइम पर पानी न पीने से होता है। गर्मी के दिनों में यह गलती काफी भारी पड़ सकती है।

आयुर्वेद में पानी को अमृत समान माना गया है। यह प्राणों के लिए अति आवश्यक है। यह शरीर को साफ करने में मदद करता है। इसी के जरिए सारे विटामिन और मिनरल अलग-अलग अंगों के पास पहुंचते हैं। पानी की कमी से बॉडी बेजान हो जाती है। सुबह उठते हीखाना खाने से 30 मिनट पहलेनहाने से पहले

एक्सरसाइज से पहले, दौरान और बाद मेंसिरदर्द व माइग्रेन होने पर

पानी के फायदे पाने के लिए इसे सही तरीके से पीना जरूरी है। कुछ लोग बोतल से या खड़े होकर पानी पी लेते हैं। जबकि आपको पानी को गिलास में लेकर बैठना चाहिए। फिर एक-एक घूंट करके पानी पीना चाहिए। यह सबसे बेस्ट तरीका है।

फिजिकल परफॉर्मेंस में बढ़ोतरीएनर्जी लेवल और ब्रेन फंक्शन में सुधारसिरदर्द से बचावकब्ज से राहत गुर्दे की पथरी के इलाज में मददवेट लॉस में तेजी

बदलते जमाने के साथ जब अलॉय व्हील्स का क्रेज बढ़ा

समाचार गेट/एजेंसी

नई दिल्ली: एक जमाना था, जब गाड़ियों में स्टील व्हील लगे होते थे और ग्राहक इसी से संतोष कर लेते थे। हालांकि, बदलते जमाने के साथ जब अलॉय व्हील्स का क्रेज बढ़ा तो लोगों ने वैसी कारें खरीदने पर ज्यादा जोर दिया, जिनमें कंपनी फिटेड अलॉय व्हील्स लगे होते हैं। काफी सारे ऐसे लोग हैं, जो अपनी कार में आफ्टरमार्केट अलॉय व्हील भी लगवाते हैं और खास तौर पर पंजाब-हरियाणा में युवाओं में तरह-तरह के अलॉय व्हील्स का बड़ा क्रेज है। आप भी अगर अपनी कार के परफॉर्मेंस, लुक और राइडिंग एक्सपीरियंस को बेहतर बनाना चाहते हैं तो अलॉय व्हील एक बेहतरीन विकल्प है। ये टिकाऊ होने के साथ ही बेहतर ब्रेकिंग प्रदान करते हैं। हालांकि, अलॉय व्हील स्टील व्हील की तुलना में ज्यादा महंगे हो सकते हैं।

अलॉय व्हील अलग-अलग डिजाइन और कलर ऑप्शन में उपलब्ध होते हैं, जिससे कार को स्टाइलिश और आकर्षक लुक मिलता है। आप अपनी कार की पर्सनैलिटी और स्टाइल से मेल खाने वाले व्हील चुन सकते हैं।

अलॉय व्हील जंग और क्षरण के प्रति ज्यादा प्रतिरोधी होते हैं, जिससे उनकी उम्र लंबी होती है। अलॉय व्हील स्क्रैच और डेंट रजिस्टेंट भी होते हैं, जिससे वे बेहतर दिखते हैं और लंबे समय तक चलते हैं।

अलॉय व्हील स्टील व्हील की तुलना में ज्यादा लचीले होते हैं, जिससे ड्राइविंग ज्यादा आरामदायक होती है। अलॉय व्हील सड़क की खामियों और गड्ढों से होने वाले झटकों और कंपन को कम करते हैं।

आप अगर अपनी कार में अलॉय व्हील लगवाने की सोच रहे हैं तो कार के मॉडल और टायर के सही आकार के व्हील चुनें।

अपनी बजट और जरूरतों के अनुसार व्हील का मटीरियल (जैसे अल्यूमीनियम, मैग्नीशियम) चुनें। व्हील का सही डिजाइन चुनें, जो आपकी कार के स्टाइल से मेल खाए।

इसके बाद सबसे जरूरी है कि आप सही दुकान से अलॉय व्हील खरीदें और सुनिश्चित करें कि वे वॉ-रंटी के साथ आते हैं।

इस नेकेड स्ट्रीट बाइक में कुछ तो ऐसी खास बात

समाचार गेट/एजेंसी

एद्धह424ब्रुद्र2ह्य@एजेंसी

नई दिल्ली: कुछ चीजें बाहर से साधारण दिखती हैं, लेकिन जब आप इसे इस्तेमाल करते हैं तो फिर आपको उसकी अहमियत और महत्व के बारे में पता चलता है और यामाहा एमटी-03 ऐसी ही मोटरसाइकल है, जो आपको दिखने में तो सामान्य लगेगी, लेकिन जब आप इसे चलाते हैं तो फिर इसका असली रंग समझ में आता है और मजा मिलता है। करीब 5.5 लाख रुपये की ऑन-रोड प्राइस वाली इस नेकेड स्ट्रीट बाइक में कुछ तो ऐसी खास बात है कि यामाहा इसे इंपोर्ट कराती है और जो लोग रेसिंग और पावर के साथ ही रफ्तार का मजा लेना चाहते हैं, उन्हें यामाहा एमटी-03 पसंद आएगी।

बीते दिनों हफ्ते भर में हमें 300 किलोमीटर से ज्यादा चलाने के बाद जब हमने इसके रिव्यू को लेकर लिखना शुरू किया तो ऐसी बहुत सी बातें सामने आई, जिसके बारे में आपको बताना हमने मुनासिब समझा। तो चिलए, यामाहा एमटी-03 की कुछ खास बातें आपके सामने प्रस्तुत करते हैं।यामाहा एमटी-03 मोटरसाइकल को जो एक बात सबसे खास बनाती है, वो है इसे चलाने का मजा। आप चाहे भीड़-भाड़ हो या हाइवे पर हो या उबड़-खाबड़ रास्ते, इस बाइक को चलाने में काफी मजा आता है। सीटिंग पोजिशन हो या आपके पूरे शरीर की बाइक पर दशा, आपको किसी तरह की तकलीफ नहीं होती। छोटी हाइट वाले भी इस पावरफुल बाइक को आराम

से चला सकेंगे। 167 किलोग्राम की इस बाइक को आप हैवी ट्रैफिक में आसानी से आगे-पीछे कर सकते हैं। कॉर्नर पर हाई स्पीड में भी इसे आसानी से घुमा सकते हैं। कुल मिलाकर क्र क्स यह है कि आपको इस बाइक की आदत लग जाती है और इसमें आवाज, परफॉर्मेंस, स्पीड समेत कई ऐसी बातों की अहम भूमिका है।यामाहा एमटी-03 मोटरसाइकल में 321ष्ष्का ट्विन सिलिंडर छ्ठ॥ह्ट लिक्विड-कूल्ड इंजन लगा है, जो कि 42 बीएचपी की मैक्सिमम पावर और 29.5 न्यूटन मीटर का पिक टॉर्क जेनरेट करता है। इसमें 6 स्पीड गियरबॉक्स दिया दया है। पावर के मामले में यह स्पोर्ट्स नेकेड बाइक बीस्ट है और पल में फर्राटे भरने लगती है। इसके स्पीडोमीटर को देखकर आप बिल्कुल कनफ्यूज मत करिएगा, क्योंकि इसमें आपको मील प्रति घंटे की स्पीड दिखती है, यानी आपको लगेगा कि आप तो धीरे चला रहे हैं, लेकिन यह हवा से बातें कर रही होती हैं। एमटी-03 की टॉप स्पीड 188 घ्द्बक्ष्द्ध तक की है और हमने इसे 150 किलोमीटर प्रति घंटे की स्पीड से बिल्कुल आराम से चलाया।स्टाइलिश प्रजेंस और कंफर्टेबल सीटयामाहा एमटी-03 को कंपनी ने स्पोर्ट्स नेकेड बाइक के रूप में पेश किया है। एक तो यह आक्रामक और स्टाइलिश डिजाइन के साथ आती है, जिसमें एलईडी हेडलैंप, एलईडी टेललाइट, मस्कुलर फ्यूल टैंक, कॉम्पैक्ट रियर लुक और कंफर्टेबल सीट जैसी खूबियां दिखती हैं है। इस बाइक को कंपनी ने 2 आकर्षक कलर ऑप्शन में पेश किया है, जो कि बेहद आकर्षक लगते हैं और ये स्टाइल स्टेटमेंट लोगों को इस बाइक को घूरने पर मजबूर कर देते हैं। अक्सर पावरफुल बाइक्स खरीदते या चलाते समय लोग इसपर ध्यान देते हैं कि इसकी हैंडलिंग कितनी आसान है। सच बताएं तो यामाहा एमटी-03 मोटरसाइकल हैंडलिंग के मामले में कमाल है। इस बाइक पर आपका कंट्रोल बिल्कुल इस तरह होता, जैसे किसी शायर की शायरी लिखते समय कलम पर और किसी मैकेनिक की सामान को ठीक करने पर। इसके दोनों पिहयों में डिस्क ब्रेक्स लगे हैं, जो आपको बेहतरीन ब्रेकिंग रिस्पॉन्स का नजराना पेश करते हैं। बाइक में उल्टे फ्रंट फोर्क और एडजस्टेबल रियर सस्पेंशन भी है, जो अलग-अलग तरह की रोड कंडिशन में कंफर्टेबल राइडिंग का मजा देती है।

फीचर्सयामाहा एमटी-03 को फीचर लोडेड बाइक की बजाय पावरफुल बाइक्स के तौर पर देखा जाना चाहिए। हालांकि, कंपनी ने इसमें अच्छे फीचर्स दिए हैं, जिनमें डिजिटल इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर है और इसमें आपको स्पीडोमीटर, ओडोमीटर, ट्रिपमीटर, फ्यूल गेज और टैकोमीटर दिखते हैं। डुअल चैनल एबीएस तो दिए गए हैं, लेकिन ट्रैक्शन कंट्रोल और स्लिपर क्लच की कमी इसमें दिखती है। इन सबके साथ ही यामाहा एमटी-03 की खूबियों में इसकी पावरफुल लाइ-ट्स की चर्चा जरूर की जानी चाहिए। आप जब इसे रात में चलाते हैं तो हेडलाइट का दायरा इतना ज्यादा दिखता है कि आपको खराब रास्ते हो या हाइवे, बाइक राइडिंग में मजा आता है। यामाहा एमटी-03 स्पोर्ट्स नेकेड बाइक में अपना खास स्थान रखती है और यह उन राइडर्स के लिए परफेक्ट चॉइस है, जो एक रोमांचक और स्टाइलिश मोटरसाइकल चाहते हैं या जोग लोग शौकीन हैं, वे भी इसे अपनी गैराज में रखना चाहेंगे। हालांकि, कंपनी अगर इस बाइक में कुछ और जरूरी टेक फीचर्स और ट्रैक्शन कंट्रोल के साथ ही कलर इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर देती तो इसे खरीदने वालों को और ज्यादा मौज होती। इसकी मौजूदा एक्स शोरूम प्राइस 4.60 लाख रुपये और कंपनी इसे सीबीयू के रूप में पेश कर रही है। अपने प्राइस पॉइंट को यह कई तरीके से जिस्टफाई करती है, लेकिन बाकी प्रतिद्वंदियों के मुकाबले महंगी तो है।

होडल मै बीजेपी विधायक जगदीश नायर ने की प्रेसवार्ता

जगदीश नायर ने सभी कार्यकर्ताओं के साथ लड्डू खिला कर जश्न मनाया

समाचार गेट/हरिओम भारद्वाज

होडल। बीजेपी विधायक जगदीश नायर ने की प्रेसवार्ता नायर ने लोक सभा मै बीजेपी की जीत पर कार्यकर्ताओं का और जनता का धन्यवाद किया साथ ही नायर ने कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष उदयभान पर जमकर हमला बोला कहा की फरीदाबाद प्रदेश अध्यक्ष उदयभान का ग्रह छेत्र है उसके बाजूद फरीदाबाद लोक सभा की सीट बीजेपी की जीत होना बड़ी बात है इसका मतलब उदयभान को अपने अध्यक्ष पद से इस्तीफा दे देना चाहिए।

विधायक ने अपने कार्यालय पर प्रेस वार्ता की नायर ने बताया कि फरीदाबाद लोक सभा प्रत्यासी कृष्ण पाल की तीसरी बार जितने पर जनता की और कार्यकर्ताओ में महन्त की जीत है आपको बता दे की बीजेपी विधायक जगदीश नायर ने कहा जनता ने दिखा दिया कि प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी जी के विकास पर विश्वास जताया है जिसका असर विधान सभा के चुनावो में भी भारी बहुमत से जीकर तीसरी बार फिर से बीजेपी की सरकार बनेगी।

वही जगदीश नायर ने कांग्रेस पर हमला बोलते हुए कहा की फरीदाबाद लोक सभा छेत्र उदयभान का ग्रह छेत्र है और उदयभान अपने लोक सभा प्रत्यासी को ही नही जीता पाए तो ऐसे में उदयभान को अपने हरियाणा कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष पद से इस्तीफा दे देना चाहिए जगदीश नायर ने सभी कार्यकर्ताओं के साथ लड्डू खिला कर जश्न मनाया वही कार्यालय पर बीजेपी जीत को लेकर लोगो का बधाई देने का ताता लगा हुआहै वही जगदीश नायर ने दावा किया की फिर से तीसरी बार नरेंद्र मोदी की सरकार बनने जा रही है।

नीट परीक्षा में एसडी स्कूल की दो छात्राओं ने रचा इतिहास

समाचार गेट/सुनील दीक्षित

कनीना। हाल ही में जारी किए नीट के परीक्षा परिणाम में एसडी वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय ककराला की दो छात्राओं ने टॉप स्थान हासिल कर इतिहास रचने में कामयाबी हासिल की है। छात्रा प्राची कनीना ने 720 में से 715 तथा रौनक यादव ककराला ने 720 में से 710 अंक प्राप्त कर क्षेत्र का नाम गौरवान्वित किया है। विद्यालय चेयरमैन जगदेव यादव ने दोनों मेधावी छात्राओं को सम्मानित करते हुए इस सफलता का श्रेय विद्यार्थियों, स्टाफ सदस्यों व अभिभावकों को दिया है। उन्होंने बताया कि दोनों छात्राओं ने प्रथम प्रयास में ही इस प्रतियोगी परीक्षा के परिणाम में सफलता हासिल की है। उनकी सफलता इस पहलु को भी सिद्ध करती है कि मेहनत का कोई विकल्प नहीं होता। कठोर परिश्रम व उचित मार्गदर्शन से असंभव कार्य भी संभव हो सकता है। विद्यालय के प्राचार्य ओमप्रकाश यादव ने सभी विद्यार्थियों एवं विद्यालय के शिक्षकों की मेहनत पर खुशी जताई है। उनकी मेहनत विद्यालय के साथ-साथ पूरे क्षेत्र के लिए प्रेरणादायक है। उन्होंने कहा कि एसडी विद्यालय कैंपस में प्राथमिक शिक्षा विभाग से ही ऐकडेमिक शिक्षा के साथ-साथ प्रतियोगी परीक्षाओं कि ऑनलाईन व ऑफलाईन तैयारी करवाई जाती है।

नीट की परीक्षा उत्तीर्ण करने वाली छात्रा प्राची सुप्तती का कहना है कि वह नर्सरी से ही इस विद्यालय की छात्रा रही है। बारहवीं कक्षा की पढाई के साथ पहले ही प्रयास में सफलता हासिल करने का श्रेय एसडी विद्यालय शिक्षकों व माता पिता को दिया है। उन्होंने नोवीं कक्षा से ही न्युरोलॉजिस्ट डॉक्टर बनने का सपना देखा था। जो अब पूरा होता दिखाई दे रहा है।

वर्सन छात्रा

छात्रा रोनक यादव ने बताया कि वह नियमति रूप से एसडी विद्यालय छात्रा रही है। कक्षा कक्ष से पढाई करने के बाद उन्होंने नीट की परीक्षा उत्तीर्ण की है। विद्यालय का माहौल पूर्ण रुप से पढाई के अनुरुप तथा अध्यापकों के सहयोग का रहता है। उन्होंने बताया कि डॉक्टर बनने का सपना उनके नाना जी संजोया था। रोनक का पिता भारतीय सेना में रहकर देश की सीमाओं की रक्षा कर रहे हैं। वह अब न्युरोलॉजिस्ट डॉक्टर बनकर देश के नागरिकों की

सिवानी में शनि महाराज का जागरण आज

समाचार गेट/सोनिका सूरा

सिवानी। शहर के रूपाणा रोड पर बने शिन मंदिर कमेटी की ओर से विशाल जागरण व भंडारे का कार्यक्रम का आयोजन 6 जून को करवाया जाएगा ।

यह आयोजन शिन जयंती महोत्सव के रूप में किया जाएगा जिसमें दूर दराज के अनेक भजन गायक शिन महाराज के भजन प्रस्तुत करेंगे। इस बारे में जानकारी देते हुए शिन मंदिर के पुजारी संदीप भार्गव ने बताया कि हर साल की भांति इस साल भी शिन अमावस्या के मौके पर 6 जून को मंदिर प्रांगण में वार्षिक शिन जयंती महोत्सव कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा। इस मौके पर विशाल जागरण के अलावा भंडारा भी लगाया जाएगा।

विधान सभा चुनावों पर पडने वाले असर को लेकर पार्टी कार्यकर्ताओं में शुरू हुआ चर्चाओं का दौर

समाचार गेट/सुनिल दीक्षित

कनीना। हरियाणा में लोकसभा मतदान की गिनती होने के बाद सियासी गलियारों में तरह-तरह की चर्चाएं चल पडी हैं। विभिन्न पार्टी कार्यकर्ताओं का मानना है कि 4 माह बाद होने वाले विधान सभा चुनावों पर इस चुनाव परिणाम का असर देखेने को मिल सकता है। प्रदेश की 10 लोकसभा सीटों में से एकआध को छोडकर किसी भी सीट पर त्रिकोणिय मुकाबला दिखाई नहीं दिया। जिसका नतीजा कांग्रेस व भाजपा प्रत्याशियों के मध्य सीधे मुकाबले का रहा। मतदाताओं की समझदारी से चौटाला परिवार की इनेलो व जेजेपी को साफ कर दिया। माना जा रहा है कि कांग्रेस पार्टी की ओर से जनता ने चुनाव लडा है जबकि भाजपा की ओर से दिगगजों व शासन-सत्ता की ओर से पसीना बहाया गया है। भिवानी-महेंद्रगढ लोकसभा चुनाव क्षेत्र से भले ही 17 उम्मीद्वार चुनाव मैदान में थे लेकिन मुकाबला केवल भाजपा व कांग्रेस पार्टी प्रत्याशी के बीच रहा। लोहारू,बाढडा तथा दादरी तीन हलकों से कांग्रेस पार्टी प्रत्याशी राव दान सिंह आगे रहा वहीं भिवानी, तोशाम, अटेली, महेंद्रगढ, नारनौल व नांगल चौधरी के छह हल्कों में भाजपा उम्मीद्वार चौ धर्मवीर सिंह आगे रहे। लोहारू से कांग्रेस पार्टी को 72209 तथा भाजपा को 63890 मत मिले। इसी प्रकार बाढडा से कांग्रेस को 76972 व भाजपा को 49870, दादरी से कांग्रेस को 64588 व भाजपा को 59307 मत मिले। उपरोक्त तीनों हलकों में भाजपा पिछडती दिखाई दी। जबकि भिवानी में कांग्रेस पार्टी को 52383 भाजपा को 81234, तोशाम से कांग्रेस को 65124 तथा भाजपा को 73187, अटेली से कांग्रेस को 56695 तथा भाजपा को 76198, महेंद्रगढ से कांग्रेस को 67008 तथा भाजपा को 71848, नारनौल से कांग्रेस को 40718 तथा भाजपा को 58380, नांगल चौधरी से कांग्रेस पार्टी को 46229 तथा भाजपा को 48821 वोट मिले। पोस्टल बैलेट पेपर में कांग्रेस पार्टी को 5228 तथा भाजपा को 5929 मत मिले। चुनावी नतीजों की मानें तो हरियाणा में क्षेत्रिय दलों का कोई भविष्य दिखाई नहीं दिया। इनेलो,जजपा के अलावा अन्य राजनीतिक दलों के प्रत्याशी शुरू से ही पिछडते हुए दिखाई दिए।

विश्व पर्यावरण दिवस पर ककराला में किया गया पौधारोपण

समाचार गेट/सुनिल दीक्षित

कनीना। विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर बुधवार को ककराला गांव में पौधारोपण किया गया। जनशिक्त विकास संगठन की ओर से आयोजित इस समारोह के मुख्यातिथि पंचायत समिति कनीना के चेयरमैन जेपी यादव थे। जिन्होंने पौधारोपण कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया। उन्होंने कहा कि प्रत्येक नागरिक द्वारा पौधारोपण किया जाना चाहिए। जिससे शुध ऑक्सीजन मिल सके। उन्होंने कहा कि भारत देश विश्वभर में पर्यावरण प्रदूषण तेजी से बढ रहा है। लगातार बढते प्रदूषण के कारण प्रकृति-वनस्पति खतरे में हैं। प्रकृति जीवन जीने के लिए प्राणियों को सांसे उपलब्ध कराती है। ऐसे में प्रकृति प्रभावित होगी तो जीवन प्रभावित होना निश्चित है। प्रकृति को प्रदूषित होने से बचाने के उद्देश्य से पर्यावरण दिवस मनाने की शुरुआत हुई। संगठन के प्रधान दीपक कुमार वशिष्ठ ने कहा कि प्रतिवर्ष 5 जून को पर्यावरण दिवस इसलिए बनाया जाता है। उनकी ओर से ग्रामीणों में पर्यावरण को लेकर जागरूकता पैदा की जा रही है। उन्होंने कहा कि लगातार बढती गर्मी पर लगाम लगाने की दिशा में अत्यधिक पौधारोपण करना जरूरी है। समय रहते वृक्षारोपण न किया गया तो भविष्य में तापमान 55-60 डिग्री सेल्सियस होने में नहीं लगेगी। उन्होंने ग्रामीणों को सामाजिक पर्वों पर पौधा रोपण करना चाहिए।

उन्होंने कहा कि शहरों में प्रदूषण इतना बढ गया है कि सांस लेने में कठिनाई आ रही है।

श्री विश्वकर्मा कौशल विश्वविद्यालय में मनाया गया विश्व पर्यावरण दिवस

समाचार गेट/ज्योति खंडेलवाल

पलवल। श्री विश्वकर्मा कौशल विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. राज नेहरू ने कहा कि यदि पौधे हैं तो प्राण हैं। पौधों के बिना प्राण की कल्पना भी नहीं की जा सकती। वह बुधवार को विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर पौधारोपण करते हुए विद्यार्थियों को प्रेरित कर रहे थे। कुलपति डॉ. राज नेहरू, कुलसचिव प्रोफेसर ज्योति राणा, अकादमिक अधिष्ठाता प्रोफेसर आर एस राठौड़, डीन प्रोफेसर जॉय कुरियाकोजे ने अपने हाथों से पौधे लगाए और विद्यार्थियों को अधिक से अधिक पौधे लगाने के लिए प्रेरित किया। विद्यार्थियों ने विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर श्री विश्वकर्मा कौशल विश्वविद्यालय परिसर को हर भरा बनाने का संकल्प लिया। कुलपति डॉ. राज नेहरू ने कहा पौधों का सीधा सरोकार जीव जगत से है। प्रकृति की समृद्धि मानव जाति ही नहीं, बल्कि संपूर्ण ब्रह्मांड के लिए जरूरी है। कुलपति डॉ. राज नेहरू ने कहा कि पौधे लगाना जितना जरूरी है, उतनी ही जरूरी उनकी देखभाल भी है।

कुलसचिव प्रोफेसर ज्योति राणा ने विद्यार्थियों को अधिक से अधिक फलदार और छायादार स्वदेशी पौधे लगाने के लिए प्रेरित किया। डीन एग्रीकल्चर प्रोफेसर जॉय कुरियाकोजे ने कहा कि विश्वविद्यालय के फार्म हाउस को और अधिक हरा भरा बनाया जाएगा।

इस अवसर पर एसिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. हरीश, डॉ. तेजेंद्र सिंह, डॉ. स्मिता, चंद्रशेखर, पुष्पेंद्र और हेमंत के अलावा काफी संख्या में विद्यार्थी भी उपस्थित थे।

धर्म पब्लिक स्कूल ने नीट 2024 के परीक्षा परिणाम में किया शानदार प्रदर्शन

समाचार गेट/ज्योति खंडेलवाल

पलवल। धर्म पिब्लक स्कूल के स्टूडेंट्स ने एक बार फिर से अपना परचम लहराया है । धर्म पिब्लक के लगभग 40 विद्यार्थियों ने नीट की परीक्षा पास की है लेकिन स्कूल के 15 स्टूडेंट्स ऐसे हैं जो गवर्नमेंट सीट पर दाखिला लेने के पात्र बनकर शानदार स्कोर बनाया है स्कूल के छात्र दीपांशु ने 669/ 700, छात्र कृष्ण गुप्ता ने 653/700,भाव्या गोयल ने 614/700, हिमांशी ने 604/ 700, भूर्पेंद्र ने 594/700, अदिती मित्तल ने 590/700, तनु ने 548 /700 व यशिका, पूनम, नेहा, महक, योगिता आदि अनेक स्टूडेंट्स ने अपना माता-पिता व अध्यापकों का तथा स्कूल का नाम रोशन किया है।

स्कूल प्रबंधक श्री पवन अग्रवाल, प्रिंसिपल ज्योति डॉगि, डॉ. प्रभाकर कौशिक तथा डॉ. विकास साद ने इस अवसर पर इन छात्रों को स्कूल में माला पहनाकर तथा मिठाई खिलाकर बधाई दी और उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं दी हैं पवन अग्रवाल ने आशा व्यक्त करते हुए कहा की आने वाले समय में हम और मेहनत करेंगे तथा अपने यहाँ चलने वाली ''विज़न क्लासेस'' के माध्यम से ज्यादा से ज्यादा नीट तथा जेईई जैसी परीक्षाओं में छात्रों को कामयाब कराने का प्रयास करेंगे।

लगभग 40 विद्यार्थियों ने नीट की परीक्षा पास की है लेकिन स्कूल के 15 स्टूडेंट्स ऐसे हैं जो गवर्नमेंट सीट पर दाखिला लेने के पात्र बनकर शानदार स्कोर बनाया है

ट्रैक्टर की टक्कर से बुजुर्ग महिला की मौत

समाचार गेट /हरिओम भारद्वाज

होडल। हसनपुर दीघोट रोड़ पर लीखी गांव में ट्रैक्टर की टक्कर से एक महिला की मौत हो गई।

महिला सड़क किनारे अपने पशुओं को बांधने गई थी। ग्रामीणों ने ट्रैक्टर चालक को पकड़कर पुलिस के हवाले कर दिया।

पुलिस ने मृतक महिला के लड़के की शिकायत पर मामला दर्ज कर लिया और महिला के शव का पोस्टमार्टम कराकर शव उनके परिजनों को सौंप दिया।

आवाज सुनकर पड़ोसी भाग कर पहुंचे और देखा कि मेरी माता सड़क किनारे घायल अवस्था में पड़ी हुई थी उन्होंने ट्रैक्टर चालक को पकड़ लिया जिसे बाद में पुलिस के हवाले कर दिया गया।

उन्होंने बताया कि जब वह अपनी मां को लेकर इलाज के लिए हसनपुर सरकारी अस्पताल में ले गए दो चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया। हेमराज की शिकायत पर हसनपुर थाना पुलिस ने मृतक केशव को अपने कब्जे में लेकर उसे पोस्टमार्टम के लिए पलवल सरकारी अस्पताल में भेज दिया।पोस्टमार्टम होने के बाद हसनपुर थाना पुलिस ने मृतक के शव को परिजनों को सौंप दिया। हेमराज की शिकायत पर हसनपुर थाना पुलिस ने मामला दर्ज कर कार्रवाई शुरू कर दी है।

» लीखी निवासी हेमराज ने हसनपुर थाना पुलिस को शिकायत देते हुए कहा कि उसकी बुजुर्ग मां किरपा सड़क किनारे गढे हुए खूंटे पर भैंस बांधने गई थी कि तेज गति से आ रहे एक ट्रैक्टर ने सीधी टक्कर मार दी जिससे वह बुरी तरह घायल हो गई।

लंबे समय से टूटे सडक मार्ग को नहीं किया जा रहा ठीक

समाचार गेट/सुनिल दीक्षित

कनीना-महेंद्रगढ स्टेट हाईवे से गुढा गांव को लिंक करने वाला रोड टूटने से सडक हादसों को बढावा मिल रहा है।

रेलवे क्रासिंग फाटक गुढा से बस स्टैंड जाने वाले 12 फुट चौडे मार्ग की साइडें कटने तथा में गड्ढे होने वाहन चालक परेशान हैं।

ग्रामीणों ने इस मार्ग को 18 फुट अपग्रेड कर पुर्निनर्माण की मांग की है।

दूसरी ओर कनीना-महेंद्रगढ सडक मार्ग पर उन्हाणी के समीप से गुजर रही रामपुरी डिस्ट्रीब्यूटरी के लीकेज साईफन के कारण करीब दानों ओर दो सो मीटर तक सडक में गड्ढे बने हुए हैं।

पर्यावरण दिवस पर लगाया गया कानूनी जागरूकता शिविर

समाचार गेट/सोनिका सूरा

सिवानी मंडी। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के अनुमोदन पर उपखंड कानूनी सेवाएं समिति के चेयरमैन सुनील कुमार न्यायिक मजिस्ट्रेट सिवानी के आदेश पर शहर के सेठ मेघराज जिंदल राजकीय स्नातकोतर महाविद्यालय में बुधवार को पर्यावरण दिवस के मौके पर कानूनी जागरूकता कैंप का आयोजन किया गया जिसमें युवा पैनल अधिवक्ता अनूप देहडू ने कालेज के छात्र- छात्राओं को पर्यावरण के साथ साथ कानून की जानकारी दी और उनके अधिकारों के बारे में जागरूक करने का काम किया।